RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण
आध्यात्म की नई उड़ान
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

आजादी का अमृत महोत्सव

वर्ष 09 | अंक 05 | हिन्दी (मासिक) | मई 2022 | पृष्ठ 16 | मूल्य ₹ 9.50

20 जनवरी से
दिसंबर 2022
तक चलेगा
अभियान

सेवाओं पर मंथन] संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के साथ कोर कमेटी सदस्य और वरिष्ठ पदाधिकारियों ने लिया भाग

03 साल बाद हुई कार्यकारिणी की बैठक

75 सूत्रीय कार्यक्रम को लेकर किया मंथन

07 दिन चला विश्व सेवाओं को आकार देने पर मंथन

दया और करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण

[ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में बनाई विश्वव्यापी सेवाएं की रूपरेखा, इष वर्ष की थीम तय]

2000+ पदाधिकारी देश-विदेश से पहुंचे

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक तीन साल बाद 6 अप्रैल से 12 अप्रैल तक शांतिवन मुख्यालय में आयोजित की गई। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। इसमें सभी जोनल इंचार्ज, सबजोन प्रभारी, सभी प्रभागों के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय संयोजक, मुख्यालय संयोजक और मुख्य सेवाकेन्द्रों के वरिष्ठ ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने भाग लिया। देशभर से दो हजार पदाधिकारी बैठक में भाग लेने के लिए पहुंचे। बैठक के दौरान 75 सूत्रीय एजेंडे और देशव्यापी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की गई। साथ ही सभी ने मिलकर मंथन कर निष्कर्ष निकाला कि इस वर्ष को दया, करुणा और शांति वर्ष के रूप में मनाते हुए विशेष योग-तपस्या के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

कोरोना काल में भी सभी व्यवस्थाएं सुचारु चलीं

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि यह तीन साल बाद इस तरह के मीटिंग में चर्चा हो रही है। इतने समय बाद सभी भाई-बहनों के देखकर बहुत खुशी हो रही है। विश्व कल्याण के लिए सभी मिलकर नई-नई सेवाओं की रूपरेखा बना रहे हैं। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती ने कहा कि संस्थान का प्रयास है कि हर एक व्यक्ति तक राजयोग का संदेश पहुंचे। महासचिव बीके निर्वैर ने कहा कि जहां परहित, परमार्थ होता है वहां स्वयं परमात्मा उसे कार्य को पूरा करने में सहयोग करते हैं। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी ने कहा कि परमात्मा का कमाल है कि कोरोना काल के इतने भीषण संकट के बाद भी मुख्यालय में सभी कार्य सुचारु रूप से निर्बाध चलते रहे। कभी किसी चीज की कमी नहीं आई। बीके डॉ. निर्मला, बीके संतोष, बीके शशि, अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, मल्टी मीडिया प्रमुख बीके करुणा और कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सभी सेवाकेंद्रों पर चलेगी विशेष योग-तपस्या

वर्तमान समय की चुनौतियों के समाधान के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग ध्यान पर भी चर्चा की गई। इसमें निर्णय लिया गया कि देशभर के सभी सेवाकेंद्रों पर इस वर्ष योग-तपस्या के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। साथ ही विशेष राजयोग अनुभूति शिविर, मौन भट्टी कार्यक्रम रखे जाएंगे। ताकि आने वाले समय में विपरीत परिस्थितियों से मुकाबले के लिए सभी आंतरिक रूप से सशक्त और मजबूत हो सकें।

यह सामाजिक अभियान सालभर चलाए जाएंगे

बैठक में सभी ने सर्व सहमति से निर्णय लिया कि सालभर आत्मनिर्भर किसान, युवा सशक्तिकरण, महिलाएः नए भारत की ध्वजवाहक, व्यसनमुक्त भारत, मेरा भारत स्वस्थ भारत, सुरक्षित भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान, स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण, स्वतंत्रता के नायकों का समान और हरित क्रांति के तहत विशाल देशभर में पौधारोपण आदि अभियान चलाए जाएंगे।

समय से पहले अमृत महोत्सव का लक्ष्य पूरा

आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर महाअभियान का शुभारंभ 20 जनवरी 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। इस दौरान लक्ष्य तय किया था कि देशभर में एक साल में 15 हजार कार्यक्रम आयोजित किए जाने थे, लेकिन खुशी की बात यह है कि पिछले तीन महीने में ही संस्थान के 20 प्रभागों ने मिलकर 15 हजार कार्यक्रम करने का लक्ष्य पूरा कर लिया है। इसके तहत डेढ़ करोड़ लोगों तक यह ईश्वरीय संदेश पहुंचा है।

सेवाओं को प्रजेंटेशन के माध्यम से बताया

इस सात दिवसीय बैठक के दौरान सभी जोनल सेवाकेंद्रों, सबजोन और सभी प्रभागों ने वीडियो प्रजेंटेशन के माध्यम से जारी सेवाओं की झलकियां दिखाईं। इसमें सामने आया कि यातायात एवं परिवहन प्रभाग ने देशभर में सबसे ज्यादा सेवाओं को गति दी और तीन माह में ही सालभर के लक्ष्य को पूरा कर लिया।

‘कल्पतरुह’ महाअभियान पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ की अभिनव पहल

75 दिन में 40 लाख पौधे रोपने का लक्ष्य

ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से देशभर में चलाया जाएगा पौधारोपण अभियान

05 जून से की जाएगी शुरुआत

75 दिन चलेगा अभियान

25 अगस्त को होगा समापन

50 साल पूरे हो रहे हैं इस साल पर्यावरण दिवस के

» **शिव आमंत्रण, आबू रोड।** प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मां प्रकृति हमें देतीं हैं। क्योंकि उनका काम है देना और सिर्फ देना। ऐसे में हमारा भी फर्ज बनता है कि हम भी प्रकृति के संरक्षण के लिए अपना हाथ बढ़ाएं...चलो आज एक पौधा लगाएं। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक कदम और बढ़ाते हुए ब्रह्माकुमारीज़ ने अभिनव पहल की। ‘कल्पतरुह’ पौधारोपण महाअभियान के माध्यम से देशभर में 40 लाख पौधारोपण करने का महान लक्ष्य रखा है। इस अभिनव पहल की शुरुआत पर्यावरण दिवस के 5 जून को 50 साल पूरे होने पर की जाएगी। अभियान में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े भाई-बहनें सहभागी बनेंगे और सभी 75 दिन तक एक-एक पौधा रोज लगाएंगे। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत कल्पतरुह अभियान चलाया जाएगा।

5000
सेवाकेंद्रों पर चलेगा अभियान

50000
गीतापाठशालाओं पर भी होगा पौधारोपण

कल्पतरुह
...Growing with Values
5 जून 2022 - 25 अगस्त 2022
(विश्व पर्यावरण दिवस) (दादी प्रकाशमणिजी स्मृति दिवस)
इन 75 दिन में, प्रत्येक सेवाकेंद्र कम से कम 75 पौधे लगाएँगे
5,000 सेवाकेंद्र, 50,000 बी.के पाठशाला द्वारा 40 लाख वृक्षारोपण एवं संरक्षण
द्वारा डॉक्यूमेंटेशन
kalptaruh@gmail.com
Personal Journey
Fun filled Daily Activities
Guided Meditations
Measuring Profits
Reviving Powers

अधिक से अधिक पौधा रोपण करें

> प्रकृति को बचाने के उद्देश्य से यह अभियान शुरू किया गया है। जितना हो सके सभी ज्यादा से ज्यादा पौधारोपण करें, ताकि पर्यावरण को संजीवनी मिल सके। अभियान के तहत रोपे गए एक-एक पौधे की मॉनिटरिंग एप के माध्यम से की जाएगी।

बीके शांतनु
समन्वयक, कल्पतरुह अभियान,
शांतिवन, आबू रोड

प्र्यावरण बचाने की जिम्मेदारी सबकी है

> आज समय के जरूरत है कि हम सभी मिलकर पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य करें। पर्यावरण बचाने की जिम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति की है। सभी को आगे आकर पौधारोपण कर उसे बड़े होने तक उसकी देखभाल करने की जिमेदारी भी लेना होगी। प्रकृति को बचाने के लिए ही कल्पतरुह अभियान शुरू किया गया है। इसके तहत 40 लाख पौधे देशभर में लगाए जाएंगे।

राजयोगिनी बीके जयंती
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका और
कल्पतरुह अभियान के निदेशिका,
ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

प्रत्येक पौधे का 75 दिन तक रखेंगे ख्याल

कल्पतरुह अभियान के तहत रोपे गए पौधे को संबंधित भाई-बहन 75 दिन तक रोज उसका ख्याल रखेंगे। उसे पानी-खाद आदि देंगे और संभाल करेंगे। अभियान के तहत लगाए गए प्रत्येक पौधे का पूरा रिकार्ड रखा जाएगा। इसकी मॉनिटरिंग एप के माध्यम से की जाएगी। पौधारोपण करने के बाद एप पर उसकी फोटो अपलोड की जाएगी। 5 जून से शुरू होकर अभियान का समापन 25 अगस्त को संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि के स्मृति दिवस पर समापन होगा।

देशभर के सेवाकेंद्रों पर चलाया जाएगा अभियान

कल्पतरुह अभियान ब्रह्माकुमारीज़ के देशभर में स्थित पांच हजार सेवाकेंद्र, 50 हजार गीतापाठशाला, रिट्रीट सेंटर, मेडिटेशन सेंटर और सेवाकेंद्रों पर चलाया जाएगा। इसमें संस्थान से जुड़ीं समर्पित रूप से सेवाएं दे रहीं ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ यहां से जुड़े सदस्यगण भी भाग लेंगे। अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ के परिसर, स्कूल, कॉलेज, सरकारी कार्यालय, नगर निगम, नगर परिषद, सामूहिक पार्क आदि स्थानों पर पौधारोपण किया जाएगा।

पंपलेट्स और ब्रोसर पर लगाए बीज

अभियान के तहत बनाए गए कागज के कंपलेट्स और ब्रोसर के साथ उसमें विभिन्न फलों और वृक्षों के बीज लगाए गए हैं ताकि इन कागजों को हम जब फाड़कर कहीं भी डाले तो उसमें से बीज अंकुरित होकर पौधा का रूप ले ले। इसे ध्यान में रखते हुए इन पंपलेट्स को तैयार किया गया है।

देशव्यापी सामाजिक सेवाओं को एक्सपो में दिखाया

आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर
ब्रह्मा कुमारी

20+
से अधिक स्टाल एक्सपो में दिखाए गए

05
दिन चला एक्सपो

3000+
लोगों ने किया विजिट

» **शिव आमंत्रण, आबू रोड।** ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय के शांतिवन स्थित डायमंड हाल में देशव्यापी सेवाओं की झलकियां दिखाते हुए पांच दिवसीय एक्सपो लगाया गया। इसमें ग्राफिक्स, थ्रीडी एनीमेशन, वीडियो, बैनर के माध्यम से पिछले दो साल में हुई सेवाओं की झलकियों को दिखाया गया। उद्घाटन संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने दीप प्रज्वलन कर किया।

> कोशिश शब्द कमजोरी का होता है, उसे समाप्त कर देने में ही भलाई है।

एक साल का लक्ष्य, तीन माह में पूरा, अब तक 15 हजार से अधिक कार्यक्रम, डेढ़ करोड़ लोगों को दिया राजयोग का संदेश

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थानः प्रधानमंत्री ने आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का किया आगाज

आबू रोड/राजस्थान ■ ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान और भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे संयुक्त रूप से देशव्यापी आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का लक्ष्य मात्र तीन माह में ही पूरा कर लिया गया है। जनवरी से लेकर मार्च तक संस्थान के सेवाकेंद्रों पर महाशिवरात्रि महोत्सव के तहत दस हजार कार्यक्रम, साथ ही तीन हजार से अधिक सेमीनार, सभा, सम्मेलन आयोजित किए गए। इनसे डेढ़ करोड़ लोगों तक आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया गया। अभियान के 20 जनवरी को शुभारंभ पर पांच हजार सेवाकेंद्रों पर 15 हजार कार्यक्रम और दस करोड़ लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा गया था। ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के उमंग-उत्साह के चलते जो लक्ष्य एक साल में तय करना था उसे मात्र तीन माह में ही पूरा कर लिया गया है। अब तक 15 हजार से अधिक कार्यक्रम हो चुके हैं। यह अभियान दिसंबर 2022 तक चलाया जाएगा।

ऐसे सफर से मंजिल तक पहुंचेगा महा अभियान

20	जनवरी 2022 प्रधानमंत्री ने किया वर्चुअल शुभारंभ
01	साल देशभर में चलाया जाएगा अभियान
15	लाख से अधिक बीके भाई-बहनें सेवा में जुटे
07	अभियानों को प्रधानमंत्री ने दिखाया हरी झंडी
15	हजार कार्यक्रम देशभर में करने का रखा लक्ष्य

10	करोड़ लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य
30	देशव्यापी अभियान देशभर में जारी
05	हजार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों पर चले रहे हैं आयोजन
20	प्रभागों के तहत जारी हैं सेवाएं
1-4	अक्टूबर 2022 में आयोजित होगा भव्य समापन समारोह

जनवरी से मार्च तक रिकार्ड 15 हजार कार्यक्रम आयोजित

225	अभियान चलाए
115	बच्चों के कार्यक्रम
295	सामाजिक कार्यक्रम
09	पौधारोपण कार्यक्रम
05	मेगा उद्घाटन
99	प्रतियोगिता देशभर में
550	फेस्टिवल सेलीब्रेशन
500	वेबीनार मेडिटेशन
21	उद्घाटन कार्यक्रम
500	महिला दिवस
86	कॉन्फ्रेंस आयोजित
28	स्वास्थ्य शिविर
11	टीवी शो
36	ऑनलाइन स्पर्धा
1048	अन्य आयोजन
128	सांस्कृतिक कार्यक्रम
1000	मेडिटेशन सेशन
166	सेमीनार देशभर में
10000	शिवरात्रि महोत्सव
336	सड़क सुरक्षा के कार्यक्रम

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

महिला प्रभाग की ओर से महिलाएं-नए भारत की ध्वजवाहक देशव्यापी अभियान जारी

नारी शक्ति ने दिखाई ताकत, देशभर में 500 सम्मेलन आयोजित

महिलाओं में आत्म सम्मान और आंतरिक शक्तियों को जागृत करने में जुटा महिला प्रभाग

500	से अधिक महिला सम्मेलनों का आयोजन
150000	लाख महिलाओं ने लिया भाग
46000	ब्रह्माकुमारी बहनें संस्थान में समर्पित

आबू रोड/राजस्थान ■ ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान नारी शक्ति द्वारा संचालित दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है। इसकी मुखिया से लेकर संचालन और प्रबंधन के तमाम पदों पर नारी शक्ति ही जिम्मेदारी संभाल रहीं हैं। वर्तमान में संस्थान में 46 हजार से अधिक ब्रह्माकुमारी बहनें भारत सहित विश्व के 140 देशों में तन-मन-धन से समर्पित रूप से अपनी सेवाएं दे रहीं हैं। ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर राजयोग के पथ पर चलते हुए इन बहनों का एक ही स्वप्न है स्वर्णिम भारत को इस धरा पर साकार करना। ब्रह्माकुमारी बहनों की मेहनत, लगन और त्याग-तपस्या का ही परिणाम है कि आज देश दुनिया में 15 लाख भाई-बहनें इस महाआंदोलन में सहभागी बन चुके हैं। महिला प्रभाग की ओर से 'महिलाएं- नये भारत की ध्वजवाहक' देशव्यापी अभियान चलाया जा रहा है। अभियान की थीम पर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर 500 से अधिक सेवाकेंद्रों पर महिला सम्मेलन, सेमीनार, रैली का आयोजन किया गया।

देशभर में 25 यात्रा, 2438 बाइकर्स, 4520 किमी की दूरी, 627 कार्यक्रम, सात लाख लोगों तक पहुंचा 'सुरक्षित भारत' का संदेश

आबू रोड/राजस्थान ■ ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं परिवहन प्रभाग की ओर से सुरक्षित भारत अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत देश के अलग-अलग कोनों से सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्राएं निकालीं जा रही हैं। इनका उद्देश्य है देश में तेजी से बढ़ रही सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए संदेश देना। इनके माध्यम से लोगों को सड़क सुरक्षा के नियमों, संकेतों और जरूरी सावधानियों से अवगत कराया जा रहा है।

यातायात एवं परिवहन प्रभाग की अध्यक्षा डॉ. बीके निर्मला, उपाध्यक्षा बीके दिव्यप्रभा, राष्ट्रीय समन्वयक बीके कुंती और मुख्यालय समन्वयक बीके सुरेश शर्मा ने बताया कि देशभर में जनवरी से लेकर मार्च तक तीन माह में 25 सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्राएं निकालीं गईं। इनमें 2438 राजयोगी बाइकर्स ने भाग लेकर 4520 किमी की दूरी तय की। इस दौरान रास्तेभर 627 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 608078 लोगों को मानसिक स्वास्थ्य के लिए स्पीड, सेफ्टी और स्प्रीचुअलिटी, आध्यात्मिकता, राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया गया।

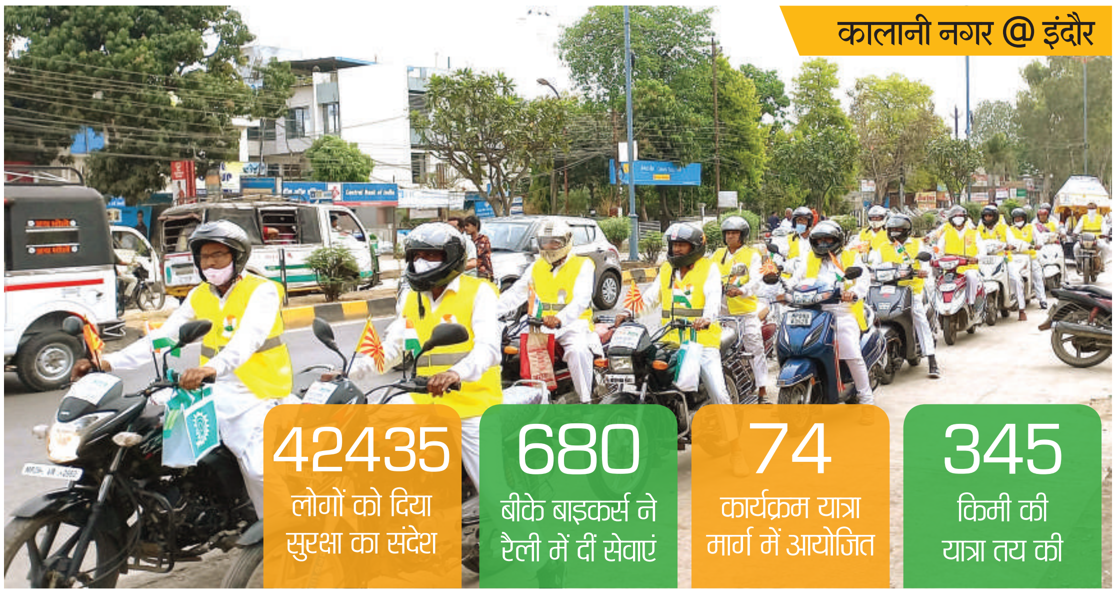
कालानी नगर @ इंदौर
42435
लोगों को दिया सुरक्षा का संदेश
680
बीके बाइकर्स ने रैली में दीं सेवाएं
74
कार्यक्रम यात्रा मार्ग में आयोजित
345
किमी की यात्रा तय की

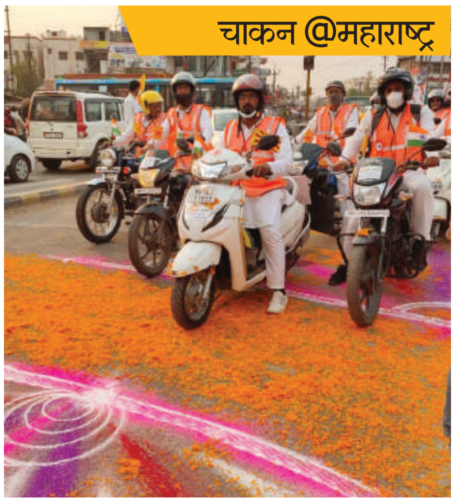

नितिन गडकरी
केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री, भारत सरकार

> सड़क दुर्घटनाएं रोकने को लेकर लोगों को जागरूक करने में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान बहुत अच्छा कार्य कर रही है। सुरक्षित भारत, समृद्धशाली भारत यही हमारी कामना है। ट्रांसपोर्ट एंड ट्रैवल विंग जन जागरण का काम कर रही है। जहां तक वाहन का स्पीड सेफ्टी से संबंधित जागरूकता अभियान चल रहा है, उसका प्रभाव निश्चित रूप से समाज पर पड़ेगा। समाज में ऐसे कार्यों की जरूत है। इससे काफी परिवर्तन होगा और एक दिन ऐसा आएगा, जब हमारा देश दुर्घटना के मामले में नहीं के बराबर होगा। हम लोगों की जान बचाने में सफल होंगे।

राजेंद्र कुमार तिवारी
चेयरमैन, उप्र राज्य परिवहन निगम, लखनऊ

> ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा सड़क सुरक्षा जागृति को लेकर बहुत ही अच्छा अभियान शुरू किया गया है। सड़क सुरक्षा के लिए सभी चालकों को सड़क सुरक्षा की ट्रेनिंग के साथ सुख-शांति अनुभव कराने वाले राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण भी आवश्यक है। इससे तनाव दूर हो जाता है। तभी सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सकती है। सड़क सुरक्षा के लिए सिर्फ सरकारी प्रयास ही काफी नहीं हैं, अपितु हम सबकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी है कि सड़क यात्रा को सुरक्षित बनाए रखने के प्रयास निरंतर करते रहें।

रायपुर ■ ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं परिवहन प्रभाग की ओर से शुरू किए गए देशव्यापी सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्रा अभियान को लेकर देश के महानगरों से लेकर छोटे शहरों में मोटर साइकिल यात्राएं निकाली गईं। इनके माध्यम से लोगों को सुरक्षित यात्रा का संदेश दिया गया।

240	बाइकर्स रैली में हुए शामिल
32	कार्यक्रम यात्रा मार्ग में आयोजित
250	किमी यात्रा अभियान के दौरान तय की
83450	लोगों को दिया सड़क सुरक्षा संदेश

25	बाइकर्स ने लिया भाग
600	किमी की यात्रा तय की
32	कार्यक्रम आयोजित
32600	लोगों को दिया संदेश

कोटा (राजस्थान) ■ ब्रह्माकुमारीज़ के कोटा राजस्थान सेवाकेंद्र की ओर से भी सुरक्षित भारत सड़क सुरक्षा मोटरसाइकिल यात्रा निकाली गई।

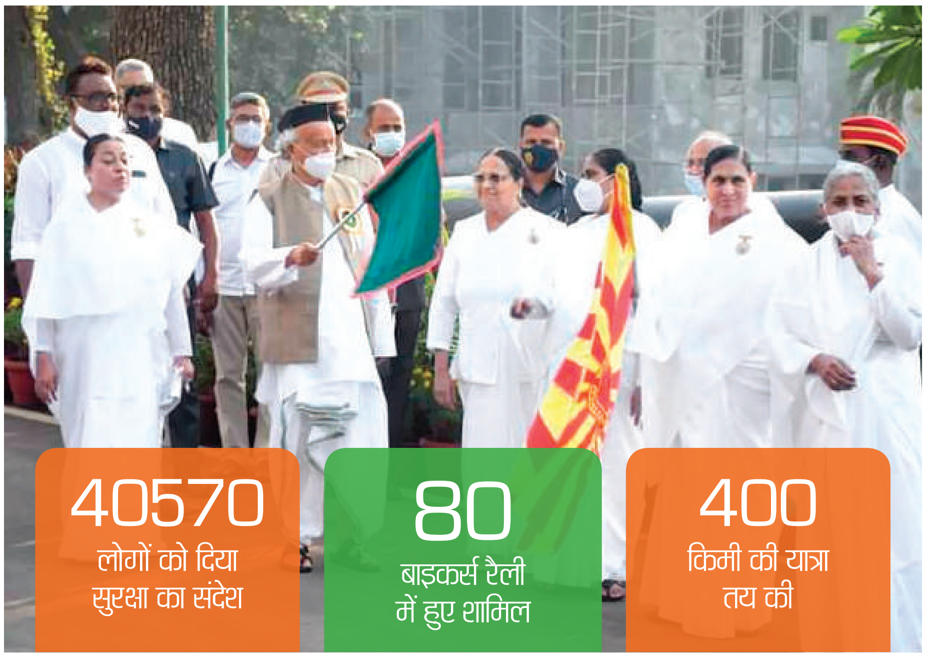

40570 लोगों को दिया सुरक्षा का संदेश

80 बाइकर्स रैली में हुए शामिल

400 किमी की यात्रा तय की

सायन (मुंबई) ब्रह्माकुमारीज़ सायन सेवाकेंद्र की ओर से सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्रा निकाली गई। शुभारंभ राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने हरी झंडी दिखाकर किया। इसमें सौ बाइकर्स शामिल हुए।

भगत सिंह कोश्यारी
राज्यपाल, महाराष्ट्र

> प्रधानमंत्री बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ को लेकर कार्यक्रम कर रहे हैं लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक परम पूज्य ब्रह्मा बाबा 86 साल पहले से ही बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम कर रहे हैं। एक प्रकार से आज हमारे प्रधानमंत्री उसी मार्ग पर चल रहे हैं। इसलिए स्वाभाविक रूप से देशवासियों के चिंतन में भी इस तरह के विचार चल रहे हैं। आज दुनिया में सबसे अधिक कठिन शांति हो गया है। भले लोगों के लिए शांति की बात कहना और करना आसान है लेकिन यह ब्रह्माकुमारियों के लिए सरल है। शांति का पाठ आज दुनिया को इन बहनों से सीखने की जरूरत है।

विश्वजीत पेगू
उपायुक्त, डिब्रूगढ़, आसाम

> सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा चलाया जा रहा सड़क सुरक्षा अभियान समाज में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण साबित होगा। सुप्रीम कोर्ट की एक्सपर्ट कमेटी के मुताबिक दस फीसदी सड़क दुर्घटनाएं कम की जा सकती हैं। इसके लिए राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास और सकारात्मक चिंतन अत्यंत आवश्यक है। व्यसनों के प्रभाव में आकर लोग हिंसा और दुर्घटना का शिकार होते हैं। सुरक्षित यातायात के लिए दृढ़ संकल्प के साथ हम सभी को मिलकर कार्य करने की जरूरत है, तभी भारत 'सुरक्षित भारत' बन सकता है।

बोरीवली, मुंबई से सड़क सुरक्षा मोटरसाइकिल यात्रा निकाली गई, जिसने सौ किमी का सफर तय किया।

■ सांसद गोपाल शेट्टी ने रैली को दिखाई हरी झंडी

■ कांदिवली, मीरा रोड, वसई, सफाला, सायन, थाणे और पालघर सेवाकेंद्र से भी निकाली गई सुरक्षा जागृति रैली

बोरीवली, मुंबई ■ ब्रह्माकुमारीज़ के बोरीवली, मुंबई सेवाकेंद्र द्वारा सुरक्षित भारत सड़क सुरक्षा मोटरसाइकिल यात्रा निकाली गई। शुभारंभ सांसद गोपाल शेट्टी, यातायात एवं परिवहन प्रभाग की उपाध्यक्षा बीके दिव्या, राष्ट्रीय संयोजिका बीके कुंती, मुख्यालय संयोजक बीके सुरेश ने किया।

180 बाइकर्स ने लिया भाग

280 किमी की रही यात्रा

18 कार्यक्रम आयोजित

62900 लोगों को दिया सुरक्षा संदेश

AMBULANCE
GA MANDAP DECORATOR
सुरक्षि
सड़क
मोटर

बोरीवली @ मुंबई

सेवाकेंद्र	बाइकर्स	यात्रा की दूरी	कार्यक्रम	लाभांवित लोग
अलकापुरी, बड़ौदा, गुजरात	78	40	03	5278
जबलपुर, नेपीयर टाऊन	85	85	12	11605
जबलपुर, कटंगा कॉलोनी	100	25	02	5450
कोरबा, छग	95	643	159	47805
पोंडा, गोवा	25	110	03	1500
गुलबर्गा, कर्नाटक	70	100	12	34000
पोरवोरिम, गोवा	60	65	08	2200
घोड़ेगांव, महाराष्ट्र	75	100	22	22000
बनेर/पुणे, महाराष्ट्र	52	120	06	14285
लातूर, महाराष्ट्र	75	14	02	4000
नरसिंहपुर, मप्र	50	100	15	3800
धमतरी, छग	75	500	32	4950
भद्रावती, कर्नाटक	80	20	01	1150
गोट्टीगेरी, बैंगलुरु	75	100	12	80500
करनूल, आंध्र प्रदेश	52	34	10	45600
अगरतला, त्रिपुरा	30	500	138	53000

लखनऊ (उप्र) ■ ब्रह्माकुमारीज़ लखनऊ की ओर से सुरक्षित भारत सड़क सुरक्षा मोटरसाइकिल यात्रा निकाली गई। शुभारंभ उप्र राज्य परिवहन निगम के अध्यक्ष राजेंद्र कुमार तिवारी, सहायक परिवहन आयुक्त निर्मल प्रसाद, आरटीओ आरपी द्विवेदी, सेवाकेंद्र प्रभारी जयश्री और बीके अर्चना ने हरी झंडी दिखाकर किया।

76 बाइकर्स ने लिया भाग

40 किमी की यात्रा

13 कार्यक्रम आयोजित

3800+ लोगों को दिया संदेश

डिब्रूगढ़ (आसाम)। ब्रह्माकुमारीज़ के डिब्रूगढ़ सेवाकेंद्र की ओर से सुरक्षित भारत सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल और कार रैली निकाली गई। इसका शुभारंभ जिला उपायुक्त विश्वजीत पेगू, जिला परिवहन अधिकारी संजीव हजारिका, सीजेएम रानी बोड़ो, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके विनीता, बीके विधान ने किया।

76 बाइकर्स ने लिया भाग

40 किमी की रही यात्रा

05 कार्यक्रम आयोजित

4600 लोगों को दिया सुरक्षा का संदेश

संपादकीय

आपसी भाईचारा की कमी के कारण होते हैं झगड़े

[बस एक ही बात समझ में आती है कि आपसी प्यार और सौहार्द्र कम होने के कारण ही हो रहा है.....]

आज पूरा विश्व इस बात से भयभीत है कि न जाने कब क्या हो जायेगा। देश के ताकतवर मुल्क दुनिया को पल भर में समाप्त कर देने वाले विनाशक हथियारों से एक दूसरे को समाप्त कर देने की धमकी दे रहे है। यदि सचमुच ऐसे हो गया तो पूरी मानवता के अस्तित्व पर ही खतरा आ जायेगा। आखिर जंग की वजह क्या है। बस यही की एक दूसरे से सुरक्षा। आखिर जब हम इंसान है तो एक आखिर यह युद्ध क्यों। हम एक दूसरे के खून के प्यासे क्यों हो गये हैं। जब हम निचोड़ पर पहुंचते है तो बस एक ही बात समझ में आती है कि आपसी प्यार और सौहार्द्र कम होने के कारण ही हो रहा है। यदि हम थोड़े से अहंकार रूपी रावण को अपने उपर हावी ना होने दे तो इस तरह की विनाशकारी स्थितियों से बचा जा सकता है। क्योंकि मानव का जान लेकर अपने संप्रभुता की रक्षा करने का कोई मतलब नहीं है। परमाता के हम सभी बच्चे है। यहॉ भले ही अलग अलग देश, जाति, धर्म मजहब की दिवारें बनी हो लेकिन सबका मालिक तो परमात्मा ही है। यह भाव जैसे ही हमारे अन्दर उत्पन्न हो जायें तो फिर इस तरह का भाव ही नहीं होगा। इसलिए वर्तमान समय में सबकुछ प्राप्त हो रहा है परन्तु छूट जो रहा वह है आपसी प्यार और एकता सदभावना। इसलिए परमात्मा का यह संदेश है कि मूल्यों को जीवन में अपनाने का प्रयास करें।

बोध कथा/जीवन की सीख

यह समय भी बीत जायेगा

एक बार एक राजा की सेवा से प्रसन्न होकर एक साधू नें उसे एक ताबीज दिया और कहा की राजन इसे अपने गले मे डाल लो और जिंदगी में कभी ऐसी परिस्थिति आये की जब तुम्हें लगे की बस अब तो सब ख़तम होने वाला है, परेशानी के भंवर में अपने को फंसा पाओ, कोई प्रकाश की किरण नजर ना आ रही हो, हर तरफ निराशा और हताशा हो तब इस ताबीज को खोल कर इसमें रखे कागज़ को पढ़ना, उससे पहले नहीं! राजा ने वह ताबीज अपने गले में पहन लिया! एक बार राजा अपने सैनिकों के साथ शिकार करने घने जंगल मे गया! एक शेर का पीछा करते-करते राजा अपने सैनिकों से अलग हो गया और दुश्मन राजा की सीमा में प्रवेश कर गया, घना जंगल और शाम का समय, तभी कुछ दुश्मन सैनिकों के घोड़ों की टापों की आवाज राजा को आई और उसने भी अपने घोड़े को एड़ लगाई, राजा आगे-आगे दुश्मन सैनिक पीछे-पीछे! बहुत दूर तक भागने पर भी राजा उन सैनिकों से पीछा नहीं छुडा पाया! भूख-प्यास से बेहाल राजा को तभी घने पेड़ों के बीच में एक गुफा सी दिखी, उसने तुरंत स्वयं और घोड़े को उस गुफा की आड़ में छुपा लिया और सांस रोक कर बैठ गया, दुश्मन के घोड़ों के पैरों की आवाज धीरे-धीरे पास आने लगी! दुश्मनों से घिरे हुए अकेले राजा को अपना अंत नजर आने लगा, उसे लगा की बस कुछ ही क्षणों में दुश्मन उसे पकड़ कर मौत के घाट उतार देंगे! वो जिंदगी से निराश हो ही गया था कि उसका हाथ अपने ताबीज पर गया और उसे साधू की बात याद आ गई! उसने तुरंत ताबीज को खोल कर कागज को बाहर निकाला और पढ़ा! उस पर्ची पर लिखा था – "यह समय भी बीत जाएगा" राजा को अचानक ही जैसे घोर अन्धकार में एक ज्योति की किरण दिखी, डूबते को जैसे कोई सहारा मिला! उसे अचानक अपनी आत्मा में एक अकथनीय शान्ति का अनुभव हुआ! उसे लगा की सचमुच यह बुरा समय भी कट ही जाएगा, फिर मे क्यों चिंतित होऊं! प्रभु और अपने पर विश्वासरख उसने स्वयं से कहा कि हाँ, यह भी समय कट जाएगा और हुआ भी यही, दुश्मन के घोड़ों के पैरों की आवाज पास आते-आते दूर जाने लगी। कुछ समय बाद वहां शांति छा गई! राजा रात में गुफा से निकला और किसी तरह अपने राज्य में वापस आ गया!

संदेश: डर हम पर हावी होने लगता है तब कोई रास्ता नजर नहीं आता, लगता है की बस, अब सब ख़तम। जब ऐसा हो तो 2 मिनट शांति से बैठिये, गहरी साँसे लीजिये! परमात्मा को याद कर स्वयं से कहिये यह समय भी बीत जाएगा!

राजयोग का अभ्यास मन की दिशा बदल देता है

मेरी कलम से...

दिलीप कु सिंघल
चैयरमेन ऑफ साई ट्रस्ट,
ग्वालियर, मप्र।

☑ आत्मा-परमात्मा को जानना मेरे लिए सौभाग्य की बात है जिसके कारण राजयोग सीखा हूं।

☑ हमारे पास प्रभू चिंतन के अलावा कुछ सोचने को नहीं रह गया है।

मैं टाईम बम बनाने वाली कंपनी बिड़ला ग्रुप में कार्यरत था। उसके बाद साई भक्त बनकर मैंने कई समाज सेवा जैसे सैंकड़ो लड़कियों का शादी करवाने का कार्य करता रहा। एक दिन साईं बाबा ने दर्शन देकर मुझे ब्रह्माबाबा का दर्शन कराया। तब मैं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का ज्ञान प्राप्त कर माउंट आबू में दादी गुलजार से मिलने की उत्सुकता जताई। लेकिन तब मुझे दादी जानकी से मुलाकात हुआ दादी ने कहा कि तुम्हें साईं बाबा ने ही यहां भेजा है क्योंकि वे खुद शिव बाबा के भक्त थे। आज मैं रोज राजयोग अभ्यास का अनुभव कर मैं लाइट, माइट, शांति, प्रेम, आनंद गहरी अनुभूति करता हूं।

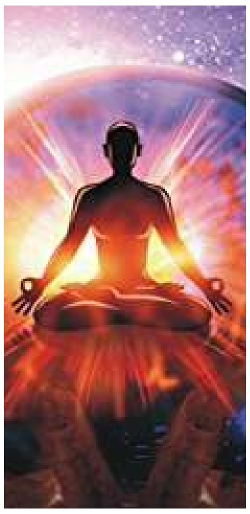

> रोज राजयोग अभ्यास का अनुभव कर मैं लाइट, माइट, शांति, प्रेम, आनंद की गहरी अनुभूति करता हूं।

परमात्मा शिव बाबा कहते हैं कि स्वयं को समझो कि मैं चैतन्य शक्ति हुं। लाइट के कार्ब में हूं। जैसे सूरज के आसपास लाइट होती है और बीच में सूरज दिखाई देता है, जैसे परमधाम में लाइट ही लाइट है। जैसे शिवबाबा एक बिन्दी है और उसके आसपास भी लाइट ही लाइट दिखती है। ऐसे ही हमें भी अपने बारे में सोचना है कि मैं ज्योति बिंदु आत्मा हूं, मेरे आस पास लाइट ही लाइट है। चलते फिरते यह अभ्यास करना है कि मैं फरिश्ते की तरह लाइट के कार्ब में चल रहा हूं। स्वयं को लाइट का शरीर अनुभव करना है। मैं लाइट के कार्ब में हूं - योग का अनुभव करने की यह एक अच्छी विधि है। दूसरी बात, योग प्रभु चिंतन है, ईश्वरीय चिंतन-मनन है, बाबा की याद है। मुझे जो भी विचार आए इस चिंतन के अनुकूल हो। योग में हमारा चिंतन और संकल्प लाइट के अनुकूल, शांति के अनुकूल, प्रेम के अनुकूल होने चाहिए। इनके प्रतिकूल संकल्प नेगेटिव और व्यर्थ होंगे, वे हमारी अवस्था को नीचे गिरा देंगे। योग में चलते फिरते भी यह अनुभव करना है कि मैं लाइट स्वरूप हूं, शांत हूं, शुद्ध व पवित्र हूं। इसके विपरीत कोई विचार बिल्कुल ना आए। जब कभी कहीं इसके विपरीत वातावरण दिखाई दे, उसके प्रभाव से बचने के लिए कभी लाइट के कार्ब में आ जाओ, कभी शांति के, शक्ति के, आनंद के और कभी प्रेम के कार्ब में आ जाओ। इसका अभ्यासी बनने के अनुसार ही हम नंबरवार पुरुषार्थी हैं। जितना अपने को लाइट के कार्ब अनुभव करेंगे, उतना ही विपरीत विचारों से दूर रहेंगे और योग में गहरा अनुभव कर सकेंगे।

जीवन की अच्छाई से स्वयं का मार्गदर्शन

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 46

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल
ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

☑ जीवन दर्शन के धर्म कर्म में उपराम स्थिति

जीवन का सजीव चित्रण व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया द्वारा संपन्न होता है जिसके अंतर्गत - व्यक्ति एक, व्यक्तित्व अनेक का व्यावहारिक स्वरुप सम्मिलित रहता है ।चेतना का परिष्कार सुनिश्चित होने पर सर्व गुणों से सुसज्जित व्यक्तित्व, कृतित्व एवं अस्तित्व का श्रेष्ठतम प्रस्तुतीकरण संभव हो जाता है। राष्ट निर्माण की समर्पित संकल्पना का यथार्थ जब व्यक्ति की व्यवहारगत उच्चता में अभिवृद्धि करके गतिशील होता है तब बहुमुखी प्रतिभा की उत्पत्ति वास्तविक सद्प्रेरणा का आधार बन जाती है। स्वयं के संदर्भ एवं प्रसंग में व्यक्तिगत स्तर पर सम्पूर्ण व्यक्तित्व का आंकलन करते हुए अच्छाई को आत्मसात करना तथा सच्चाई को जीवन का प्रमुख केन्द्रीय भाव बनाना अनिवार्य होता है। जीवन की सत्यता द्वारा स्वयं को सतत रूप से विधिवत् मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान करना व्यक्तित्व निर्माण की उज्जवल परम्परा का आधारभूत प्रमाण होता है।

आत्मीय संबंधों की प्रगाढ़ता द्वारा मर्यादित आचरण

स्वयं के साथ स्वयं का संवाद होना अंतर्मन की पवित्रता का यथार्थ बोध है जिसमें मन, बुद्धि एवं संस्कार का नियमित परिमार्जन संपादित होता है। जीवन में संस्कारगत आचरण की वैभव सम्पन्नता व्यक्तित्व की अमूल्य धरोहर है जो एक दूसरे के साथ मर्यादित आचार - विचार एवं व्यवहार से निरंतर गतिशील रहकर उच्चता को प्राप्त होती है। आत्मीय संबंधो की प्रगाढ़ता का स्वरुप सदा ही अनासक्त परिदृश्य का द्योतक होता है जिसमें निःस्वार्थ व्यवहार की निष्ठा सदैव अभिमुखित रहती है। व्यक्ति के अंतःकरण का भाव जगत ही वैचारिक श्रेष्ठता की स्वीकारोक्ति से सम्बद्ध होने के कारण जीवन की अच्छाई और सच्चाई को व्यावहारिकता की कसौटी पर अनुकरण के साथ अनुसरण करना सहज हो जाता है। आत्मा के उन्नयन हेतु पुरुषार्थ के सूक्ष्म बिन्दुओं को आत्मीय संबंधों की श्रेष्ठता से अनुभव करके मर्यादित आचरण की नैतिक पृष्ठभूमि का निर्माण सुनिश्चित किया जा सकता है।

गुणात्मक स्वरुप से सामाजिक परिवर्तन में योगदान

जीवन में गुणात्मक स्थिति की संवेदनशीलता निज कल्याण हेतु विभिन्न अवस्थाओं से अनुभव ग्रहण करने की जिज्ञासु प्रवृति को सदा जागृत रखती है। गुणात्मकता का सक्षम परिवेश व्यक्ति और घटना से उपराम होकर स्वयं को विचार एवं भावना से भी कर्मातीत बनने की शक्ति प्रदान करके अव्यक्त स्वरुप में स्थापित कर देता है। जीवन की उच्चता हेतु आत्म अनुभूति का सुखद संयोग शुद्ध उपयोग की दिशा में उन्मुख रहकर परमात्म सत्ता के प्रति सहज ही अनुगमन का अधिकारी बना देता है। सर्वगुण सम्पन्नता की श्रेष्ठता को धारण करने का पर्याय है कि व्यक्तिगत अच्छाई एवं सच्चाई के माध्यम से किए जाने वाले त्याग से सम्बद्ध कार्यों का भी त्याग अर्थात् त्याग का भी पूर्णतः त्याग अनिवार्य है। सामाजिक परिवर्तन की धारा में स्व - परिवर्तन के पश्चात् ही प्रवाहित हो जाने के श्रेष्ठ विकल्प प्राप्त होते हैं जो आत्मगत विशुद्धता से स्वतः ही अनुप्राणित हो जाते हैं।

> सिर्फ खुद के लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की शांति, विकास और कल्याण में विश्वास रखते हैं।

तात्या टोपे, स्वधीनता संग्राम सेनानायक , भारत

> एक पुरुष शिक्षित होता है तो वह एक परिवार को शिक्षित करता है जबकि एक महिला शिक्षित होती है तो वह परिवार के साथ साथ समाज को भी शिक्षित करती है।

वीरांगना लक्ष्मीबाई, झांसी की रानी

हार्दिक शुभकामनाएं
BRAHMA KUMARIS

गीता ज्ञानामृत द्वारा स्वर्णिम भारत का निर्माण विषय पर संत समागम का आयोजन

संतों के गीता पर मंथन से बही 'ज्ञानामृत' की धारा

10,000
लोगों ने लिया भाग

50+
से अधिक संत-महात्मा देशभर से पधारे

98+

ब्रह्माकुमारी बहनें शोभायात्रा में कलश लेकर चलीं

02+
दिन चला कार्यक्रम

आबू रोड (राजस्थान)। ■ ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शांतिवन में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत दो दिवसीय संत समागम आयोजित किया गया। 'गीता ज्ञानामृत द्वारा स्वर्णिम भारत का निर्माण' विषय पर आयोजित संत समागम में देशभर से 50 से अधिक नामचीन संत-महात्मा, मंडलेश्वर शामिल हुए। दो दिन चले समागम में संतों ने एक मत से कहा कि गीता सभी शास्त्रों की माता है। गीता में ही जीवन जीने की कला समाई हुई है। गीता हमें जीवन में नई राह दिखाती है। आत्मा का परमात्मा से मिलन कराती है। सच्चे गीता ज्ञान से ही स्वर्णिम भारत का निर्माण संभव है। कार्यक्रम में दस हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि दुनिया का प्रत्येक मनुष्य परमात्मा के बच्चे हैं। सबका अधिकार है कि वे परमात्मा से शक्ति लेकर सुखी रहें। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी, फिल्म अभिनेत्री सिमरण अहूजा और भाग्यश्री ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बूंद लाखों बरसती हैं किंतु मोती वही बनती है जो स्वाति नक्षत्र में सीप में मुंह में पड़ता है। नक्षत्र वही पूजा जाता है जो किसी कार्य को सिद्धी द्वार तक पहुंचा दे। जन्म वही सफल है जो दादी रतनमोहिनी की तरह अपना संपूर्ण जीवन आध्यात्म को समर्पित कर दे। इस महान तपोभूमि से मैं कहना चाहता हूं कि यह ब्रह्माकुमारीज़ परिवार विश्व का एकमात्र परिवार है जो दुनिया के 140 देश के अंदर आध्यात्मिक मूल्यों के लिए, नैतिक मूल्यों के उत्थान के लिए, शांति और सद्भावना के लिए समर्पित रूप से कार्य कर रहा है। ये कार्य माता और बहनों के द्वारा हो रहा है।

डॉ. लोकेश मुनी, संस्थापक, अहिंसा विश्व भारती, नई दिल्ली

दादी मेरी मां हैं वे बहुत बड़ी राजयोगिनी हैं, इसलिए हम लोग भी राजयोगी घर में ही जन्म लेते हैं। तब जाकर योगी बन जाते हैं और जब योगी बनने के बाद योगी के पास मां के अलावा कोई शब्द नहीं रह जाता है। आगे हम सब का जन्म ब्रह्मलोक होते हुए स्वर्णिम सुंदर दुनिया में होने वाला है। मानस परिवार और दादी ने हम सब को बुलाकर परमात्मा के रंग में रंग दिया। आबू की धरती पर परमात्मा द्वारा रोज ज्ञान ध्यान के साथ ज्ञान रूपी मुरली सुनाते हैं। ज्ञान रूपी ध्यान मुरली आखिरी सांस तक नहीं छोड़ना है।

सूर्याचार्य कृष्णागिरी महाराज
पीठाधीश्वर, जूना अखाड़ा, मुरली मंदिर, द्वारका, गुजरात

मौजूदा दौर में आध्यात्म ही है जो मनुष्य को सही राह दिखा सकता है। सभी धर्मों की शिक्षाएं लोगों को एकमत रहना सिखाती हैं। कभी भी दूसरे धर्मों का अपमान नहीं करना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का ज्ञान मानवता को स्थापित करता है। हमारी सनातन संस्कृति अपनी असली संस्कृति है। देवी-देवताओं जैसा ही मानव का स्वभाव होना चाहिए। इससे मानव समाज देव तुल्य हो जाएगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का प्रयास जरूर एक दिन रंग लाएगा। नारी शक्ति का यहां अनुपम उदाहरण देखने को मिल रहा है।

पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर स्वामी सोमेश्वरानंद सरस्वती महाराज,
श्रीराम शक्तिपीठ संस्थान

चारों दिशाओं में ही आज नारी शक्ति की जय-जयकार हो रही है। ऐसी महान विभूतियां इस सृष्टि मंच पर रहेंगी तो निश्चित तौर पर आसुरी प्रवृत्तियों का सफाया होगा। ऐसे प्रयासों से एक दिन अवश्य विश्व में बदलाव आएगा। मानव के संस्कार देव स्वरूप हो जाएंगे।

बालयोगी उमेशनाथ महाराज, पीठाधीश्वर, श्री वाल्मिकी धाम, उज्जैन, मप्र

“ब्रह्मा बाबा ने पहचाना कि मानव सृष्टि में बहुत सारे आत्मा रूपी हीरे छिपे हुए हैं। मानव सृष्टि में बहुत सारे हीरे आज राजयोगी कहलाते हैं जो ये सारे हीरे हैं। आज इनके द्वारा गीता का पैगाम भारत के कोने-कोने में समुद्र पार भी पहुंचाया जा रहा है। हमारा ये कदम आज स्वर्णिम भारत की ओर बढ़ने वाला है। पिछले 15 साल में ब्रह्माकुमारीज़ के अनेक सेवाकेंद्रों पर गया हूं। भारत का स्वर्णिम युग का प्रारंभ हो चुका है। दुनिया के सारे लोग आबू के बाबू के काबू में आ जाएं तो सारी धरती जन्नत बन जाएगी। राजयोग राज पद दिलाने वाला ही योग है।”

महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज
श्रीपंचायती उदासीन नया अखाड़ा, पटौदी, हरियाणा

“मैंने सुना था कि एक नारी को दूसरों के ऊपर आश्रित होना चाहिए लेकिन ऐसा सुनना मिथक साबित हुआ है। जहां यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय में माताएं और नारियों का सम्मान और शक्ति देखते हुए वो मेरे मन की बात गलत सिद्ध होती है। जैसे बाल्यकाल में पिता के आश्रय में रहना चाहिए, युवावस्था में पति के आश्रय में रहना चाहिए, बुढ़ापे में पुत्र के आश्रय में रहना चाहिए। ऐसे बहुत कुछ सुना था, लेकिन यहां आकर मेरे विचार आज इस विश्व विद्यालय में सभी को देखते हुए बदल गए। वो बात गलत सिद्ध हो गई।”

शंकरानंद सरस्वती महाराज
श्रीमद् जगतगुरु विश्वकर्मा महा संस्थान सावित्री पीठ मठ, कासी, कर्नाटक

“समाज को संस्कारित करने का बहुत बड़ा अभियान माउंट आबू की धरती से चलाया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाएं जनकल्याण के लिए हैं। ताकि हम परमात्मा से जुड़कर अपनी खोई हुई सत्य ज्ञान, शांति, प्रेम, आनंद, शक्ति, पवित्रता, सुख को दोबारा से प्राप्त कर सकें। मैंने संस्थान के मुख्यालय को देखा है, जहां की विधि व्यवस्था स्वयं निराकार परमात्मा शिव बाबा चला रहे हैं। कोई देहधारी मनुष्य नहीं चला सकता। शास्त्रों में जो हमने पढ़ा, उसके अनुसार परमात्मा शिव अपना कार्य ब्रह्मा, विष्णु और शंकर द्वारा इस पावन भूमि पर स्थापना, पालना, संहार का कार्य कर रहे हैं।”

महंत जन्मेजय शरण महाराज
महामंडलेश्वर, पीठाधीश्वर, भारत साधु समाज,महामंत्री, श्रीजानकी घाट, आयोध्या

जब मोह नष्ट हो जाता है तो
बन्धनमुक्त बन जाते हैं

आज़ादी के अमृत महोत्सव से
स्वर्णिम भारत की ओर

पढ़ाई, डिग्री, अंक से ज्यादा महत्वपूर्ण, आत्मिक स्थिति का मजबूत होना है

☑ विचार जितने सकारात्मक होंगे माइंड की शक्ति उतनी ही बढ़ेगी

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। एक बार एक पति ने तीन बार आत्महत्या करने की कोशिश की। क्योंकि उनका व्यापार बहुत कोशिशों के बावजूद चल नहीं रहा था, सफल नहीं थे। अब वो 6 महीने और मेहनत करने वाले हैं अगर 6 महीने में इनका व्यापार ठीक चला तो ठीक, नहीं तो फिर ये वो ही कोशिश करेंगे। भाई राजयोगा मेडिटेशन केंद्र पर आएं, मेडिटेशन सीखा अपने अंदर ताकत भरी। अभी भी परेशानी है लेकिन मैं ठीक हो गया ये महत्वपूर्ण है, बिजनेस और मैं दो अलग-अलग चीजें है, अंक और मैं दो अलग-अलग चीजें हैं,अगर मैं ठीक नहीं होउंगा तो मैं व्यापार भी कैसे करूंगा फिर मेरा प्रेरणा का स्तर ही गिर जाएगा लेकिन अपने आप को ठीक कैसे रखना है वो कोई पढ़ाई डिग्री अंक-सूची से तो नहीं होगा ना।

आज किसी की नौकरी चली जाती है, आज किसी की पदोन्नती रूक जाती है, आज किसी के व्यापार में बहुत बड़ा नुकसान हो जाता है ये सारी परिस्थितियों से सामना करने की शक्ति स्कूल में सिखाई थी क्या? क्या ये ठीक है कि जिसके जितने ज्यादा अंक उसकी सामना करने की शक्ति ज्यादा है! ऐसा नहीं है तो फिर हमारी सारी ताकत पूरा ध्यान अंक..अंक.. क्यों है? अंक ज्यादा महत्वपूर्ण या सामना करने की शक्ति ज्यादा महत्वपूर्ण है लेकिन उस सामना करने की शक्ति को तो हर रोज अंकों के फेर में कम करते जा रहे हैं। जब हम डांट रहे हैं, गुस्सा कर रहे हैं, हाथ उठा रहे हैं, दबाव डाल रहे हैं हम उसी शक्ति को कम करते जा रहे हैं। आज हमारे अंदर वो सामना करने की, सहन करने की, वो बातों को झेलने की शक्ति क्यों नहीं है क्योंकि अंकों के कारण उस शक्ति को हम कम करते गये थे। तो अंक तो बढ़ गये, पगार भी बढ़ गई, चीजें भी बढ़ गई लेकिन वो शक्ति जो जीवन में हर पल चाहिए थी वो शक्ति कम होती गई क्योंकि इन चीजों को लाने की प्रक्रिया में हमने उस शक्ति को कम किया है।

तो अंक चाहिए लेकिन साथ-साथ वो शक्ति भी चाहिए और अगर अंक एक प्रतिशत कम भी आ गया किसी कारण से तो भी हम डांटे बिना पढायेंगे तो क्या अंक कम हो जायेंगे क्या लगता है। डांट के पढ़ाते हैं तो इतने अंक आते हैं अगर बिना डांटे पढ़ायेंगे तो अंक कम हो जाएंगे! नहीं होंगे कम बल्कि बढ़ जायेंगे ठीक है। अगर मान लो हर रोज डांट खाने के बाद बच्चे के 85 प्रतिशत नंबर आते हैं और आज हम बिना डांटे बच्चे को पढ़ायें कितने अंक आयेंगे! जितने अभी आ रहे हैं उससे ज्यादा आयेंगे। आप सिर्फ डांट खाकर के काम करते हैं बिना डांट खाए काम नहीं करते आप, करते हैं या नहीं करते हैं क्योंकि जो नियम घर में है वहीं नियम आज कार्यालय में भी है। काम करवाना है तो कैसे करवाना है! डांट के करवाना है। तो जो बॉस है उसकी यही सोच है कि काम करवाना है तो डांट के करवाना है। अब अगर हम वो हैं जिनसे काम करवाया जाने वाला है, हमारे उपर बॉस है, आपको क्या अच्छा लगेगा कि आपसे काम कैसे करवाया जाए? प्यार से या डांट से! प्यार से, लेकिन अगर आप उनसे पूछोगे ना तो कहेंगे प्यार से कोई काम नहीं करता आजकल! डाटेंगे नहीं तो लोग सर पर चढ़ के बैठ जाते हैं बिगड़ जाते हैं डांटना तो पड़ता ही है ऐसे ही बोलेंगे ना। फिर बरोबर है! सब ने एक ही नियम बना लिया है कि जब तक गुस्सा नहीं करेंगे तो काम नहीं होगा तो बॉस कर्मचारी पर गुस्सा करता है, कर्मचारी घर जाकर पत्नी के उपर गुस्सा करता है, पत्नी बच्चा पर गुस्सा करती है और सभी एक ही चक्र चला रहे हैं और हरेक एक दूसरे को अपनी शक्तियों को कम करने में मदद कर रहा है क्योंकि हम कहते हैं कि काम तो हो जाना चाहिए!

काम तो हो जाएगा ना और हो भी रहा है। आज देखो क्या से क्या बन गया है दुनिया के अंदर। ये क्यों हुआ क्योंकि हम सब काम कर रहे हैं तो एक तरफ से ये सारा विकास हो गया, हमारे मकान बन गए सब-कुछ हो गया, सब-कुछ होता गया लेकिन साथ-साथ दूसरी ओर हमने देखा जो घटता जा रहा है। आज चार लेग एक घर में इकठ्ठे नहीं रह सकते, आज पति-पत्नी के तलाक की दर बढ़ गयी, आज छोटे-छोटे बच्चों को तनाव और हताशा हो गयी हमने सिर्फ कहा काम तो होता गया, काम तो होता गया।

पति-पत्नी दोनों काम करते हैं दोनों सारा दिन ऐसे वातावरण में होंगे जहां उर्जा ये होगी कि गुस्से से ही काम होता है तो उनको तो वो उर्जा तो मिलती ही रहेगी। वो दो लोग जब घर पहुंचेंगे शाम को तो उनके पास क्या ताकत बचेगी? एक दूसरे को सहन करने की, तालमेल करने की, सहयोग करने की फिर उपर से बच्चे को भी समझने की संभालने की कहां ताकत बची और फिर छोटी-छोटी बात में वही तनाव और क्लेश क्योंकि हमने कहा काम करवाने के लिए ये चाहिए।

बिसासपुर की बीके स्वाति नारी रत्न सम्मान से सम्मानित

शिव आमंत्रण, बिलासपुर (छग)। आईबीसी-24 न्यूज चैनल की ओर से बिलासपुर में आयोजित कार्यक्रम में विलासपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके स्वाति को 'नारी रत्न सम्मान 2022' से नवाजा गया। उन्हें यह सम्मान राज्यपाल अनुसुइया उइके, अटल बिहारी विवि के कुलपति डॉ. एडीएन वाजपेयी, संभागायुक्त डॉ. संजय अलंग, पुलिस महानिरीक्षक रतनलाल डांगी ने प्रदान किया। 14 महिलाओं को यह सम्मान दिया गया।

अंटार्कटिका में पहली बार लहराया परमात्म ध्वज

शिव आमंत्रण, अंटार्कटिका। धरती का सातवां महाद्वीप अंटार्कटिका में परमात्मा ध्वज लहराया गया है। ऐसा पहली बार हुआ है जब ब्रह्माकुमारीज संस्था की ओर से बीके वैशाली ने बर्फ से ढका अंटार्कटिका भूभाग पर शिव ध्वज फहराया। अमेरिका सान फ्रांसिको की बीके वैशाली ने हाल ही में अपने 19 दिन के यात्रा के दौरान अंटार्कटिका पहुंचकर कीर्तिमान बनाया। अंटार्कटिका पृथ्वी पर एकमात्र ऐसा महाद्वीप है जहां कोई मूल मानव आबादी नहीं है। आश्चर्य की बात यह है कि यह बहन ने - 98 फीसदी हिस्सा बर्फ से ढंका हुआ अंटार्कटिका पर सफेद साड़ी पहनकर यात्रा की। ब्रह्माकुमारीज संस्था के सदस्य प्रायः शांति का प्रतीक सफेद रंग अपने ऑफिसियल यूनिफार्म के रूप में पहनते हैं। वीडियोग्राफर के पूछने पर उन्होंने बताया की उनका सौभाग्य है कि उन्होंने अंटार्कटिका में संस्था को रिप्रेजेंट किया ।

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

☑ युवा देश के कर्णधार होते हैं, ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर आज लाखों युवाओं का जीवन बदल गया है, ऐसे परिवर्तनकारी युवाओं की अनुभव गाथा...

राजयोग से जीवन बना सुखी

शिव आमंत्रण । 2001 में ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान में आना हुआ। उससे पहले जिंदगी दुःख में बीत रहा था। कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। हर छोटी-छोटी बातों में उलझ कर लड़ाई-झगड़े के साथ रोना-धोना जारी रहता था। घर के लोग सहित पड़ोसी भी परेशान रहते थे। लेकिन एक दिन बुआ के साथ मेडिटेशन स्थान पर पहुंची तब मुझे परमात्म ज्ञान मिला। सभी कुसंस्कारों को झट से त्याग कर शिव बाबा को अपना साथी बनाया। सुबह-शाम राजयोग का अभ्यास निरन्तर करने लगी। फिर जीवन में जो खुशियां मिली है उसका वर्णन शब्दों में नहीं कर सकती हूं। बस इतना कह सकती हूं कि राजयोग जरूर सीखें।

रश्मि कुमारी, बाढ़, पटना, बिहार

मेडिटेशन प्रशिक्षण ने बदला जीवन

शिव आमंत्रण। 2009 में ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा बताया जा रहा राजयोग के अभ्यास से जुड़ा। उससे पहले मैं शराबी था। जिंदगी तनावग्रसित हो चुका था। बुरी संगत सब कुछ बिगाड़कर रख दिया था। गुस्सा बहुत आता था। एक दिन मेरी मुलाकात एक ब्रह्माकुमार भाई से हुई उसके बाद हमने राजयोग का प्रशिक्षण लिया। सातवें दिन ही सारी बुराईयों का त्याग कर दिया। रोजाना परमात्म मुरली महावाक्य और राजयोग अभ्यास ने जीवन को बदलकर रख दिया। आज के युवाओं से विनती करूंगा कि संगत हमारे जीवन पर बहुत ही बड़ा प्रभाव डालता है इसलिए गलत संगत से बच कर मेडिटेशन सीखें।

सत्यम कुमार, रोसड़ा बिहार

सुरक्षा सेवा प्रभाग स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण

5 कार यात्रा से 6500 किमी की दूरी तय की

देशव्यापी अभियानः नई दिल्ली से चार प्रदेशों के लिए निकली कार यात्राएं

ब्रह्माकुमारीज़ के हरीनगर, नई दिल्ली सबजोन से कार यात्रा अभियान का शुभारंभ किया गया।

हरीनगर/नई दिल्ली ■ ब्रह्माकुमारीज़ के हरीनगर सबजोन द्वारा सुरक्षा सेवा प्रभाग के तहत पांच मेगा कार यात्रा निकालीं गईं। इनके माध्यम से 6500 किमी की यात्रा तय की गई। वहीं 168 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों से 20169 भारतीय सेना के जवानों, थल सेना, सीआरपीएफ, आईएसबीटी जवानों को संदेश दिया गया।

05	मेगा अभियान देशभर में चलाए गए
6500	किमी की दूरी तय की
168	कार्यक्रम आयोजित किए गए
20169	लोग लाभान्वित

आगे यहां कार्यक्रम होंगे आयोजित

- भारतीय नौसेना
- थल सेना
- सीआरपीएफ
- आईएसबीटी
- पुलिस फोर्स

नई दिल्ली से अहमदाबाद के लिए निकाली गई कार यात्रा

अरुण देव गौतम
आईपीएस, गृह सचिव,
रायपुर, छत्तीसगढ़

> मानसिक तनाव और तेज गति से वाहन चलाने से भी दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। ज्यादातर दुर्घटनाएं वाहन चालक की लापरवाही से होती हैं। उसे यह समझ ही नहीं होती है कि उसका एक कृत्य कितने लोगों को बेसहारा बना देगा? सजगता के अभाव में दुर्घटनाओं पर काबू पाना संभव नहीं है। गाड़ी चलाते समय दूसरों को भी अपने समान मानकर उनकी असुविधा का ध्यान रखें। हमारी आजादी वहां समाप्त हो जाती है जहां दूसरों की आजादी शुरू होती है। मेडिटेशन से मन शांत होता है। इससे काफी हद तक हम कई समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

हरीनगर सबजोन से चलाए गए देशव्यापी कार अभियान

शुभारंभ	समापन	दूरी	कार्यक्रम	प्रतिभागी
नई दिल्ली	एनसीआर	200	09	976
नई दिल्ली	अहमदाबाद	3000	40	5600
नई दिल्ली	उत्तराखंड	1500	50	5000
नई दिल्ली	जम्मू	1000	44	4773
तेजपुर	टवंग	800	25	2820

मिनी मैराथन में देशभक्ति का संदेश लेकर दौड़े युवा

400 युवाओं ने लिया भाग

06 किमी की लगाई दौड़

विजेताओं के नाम हैं-

35 साल से ऊपर की कैटेगरी में
- प्रथम शिवि
- द्वितीय बलकार
- तृतीय सेंथिल

35 साल से नीचे की कैटेगरी में

- प्रथम अमरप्रीत
- द्वितीय हरपाल सिंह
- तृतीय सनी

गर्ल्स में विजयी रही

- प्रथम रिंपी
- द्वितीय रीतिका
- तृतीय आराधना

दयाल बाग/अंबाला कैंट (हरियाणा) ■ ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के खेल प्रभाग की ओर से दयालबाग, अंबाला कैंट में मिनी मैराथन का आयोजन मेरा भारत-मेरी शान थीम पर किया गया। शुभारंभ हरियाणा के गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज, खेल प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके जगबीर, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके आशा ने हरी झंडी दिखाकर किया। मैराथन में 400 से अधिक युवाओं ने भाग लिया। मैराथन में आगे-आगे युवा तिरंगा झंडा लेकर दौड़ते हुए चले। इसके माध्यम से लोगों को देशप्रेम और स्वास्थ्य का संदेश दिया गया। समापन पर विजेताओं को प्रशस्ति पत्र, शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इंडस्ट्रियल एक्सपो से 15 हजार लोगों को मिला संदेश

11-15	मार्च तक चला इंडस्ट्रियल एक्सपो
700	इंडस्ट्रीज ने लिया भाग
15000	व्यापार से जुड़े लोगों को पहुंचा संदेश

फरीदाबाद में आयोजित इंडस्ट्रियल एक्सपो में ब्रह्माकुमारीज़ के स्टॉल का अवलोकन करते केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर और एक्सपो की जानकारी देते हुए बीके पूनम और बीके राज सिंह।

फरीदाबाद (हरियाणा) ■ फरीदाबाद में 11 मार्च से 15 मार्च तक इंडस्ट्रियल एक्सपो का आयोजन दो स्थानों पर किया गया। इसमें लगभग 700 इंडस्ट्रीज ने अपने प्रोडक्ट का प्रदर्शन किया। एक्सपो में भाग लेने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग को भी आमंत्रित किया गया। जो कि दो अलग-अलग एसोसिएशन द्वारा एक्सपो का आयोजन किया गया। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ के स्टॉल का 15 हजार से अधिक व्यापारी एवं उद्योगपतियों ने अवलोकन किया। इसके साथ ही व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा व्यापार एवं उद्योग में मोटिवेशनल प्रोग्राम और सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग की जानकारी दी गई। कई कंपनियों के एमडी और एचआर हेड ने ट्रेनिंग प्रोग्राम की पूरी जानकारी ली। साथ ही अपनी कंपनी और इंडस्ट्री में कार्यक्रम कराने के लिए आमंत्रित भी किया।

सदा श्रेष्ठ कार्य करने वाले, सोचने वाले, बोलने वाले फरिश्ते हो

आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर

खबर, एक नज़र

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को दिया ईश्वरीय संदेश

शिव आमंत्रण, अंबिकापुर छग.। रायपुर के कांग्रेस भवन में जाकर सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका बीके विद्या एवं बीके अहिल्या ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू, मत्स्य, पशुपालन एवं संसदीय कार्य मंत्री रवीन्द्र चौबे, राज्यमंत्री खाद्य एवं संस्कृति विभाग अमरजीत भगत को पुष्पगुच्छ, ईश्वरीय प्रसाद तथा सौगात देकर मुलाकात की एवं ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमत्रंण भी दिया।

शाश्वत यौगिक खेती से उपजाऊ बन रहा खेत

योगिक एवं जैविक कृषि जागृति सम्मेलन
तथा सम्मान समारोह

शिव आमंत्रण, सारंगपुर मप्र। प्रजापिता बह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा किसान सशक्तिकारण अभियान के तहत सारंगपुर के ग्राम गुलावता में किसान सशक्तिकरण रैली, नाटय प्रस्तुति और स्टेज शो के माध्यम से किसानों में आध्यात्मिक जागृति लाकर उन्हें सशक्त बनाने हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ब्रह्माकुमारीज का यह प्रयास किसानों के लिए एक अनूठी पहल है जिसमें किसान शाश्वत यौगिक खेती के गुर सीखकर अपने खेतों को प्राकृतिक रूप से उपजाऊ बनाकर उच्च गुणवत्ता वाली फसल प्राप्त कर रहे हैं।

ईमानदारी रूपी गहनें को धारण करना चाहिए-बीके निर्मला

शिव आमंत्रण, राँची । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के स्थानीय सेवाकेन्द्र चौधरीबगान, हरमू रोड रॉची में ब्रह्माकुमारीज के पूर्व प्रमुख प्रशासिका दादी जानकी के द्वितीय पुण्य तिथि को वैश्विक आध्यात्मिक जागृति दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर दीप प्रज्जवलित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये। कार्यक्रम में उपस्थित पद्मश्री मधु मनसूरी हंसमुख, नागपुरी गीत के गायक, लेखक एवं संगीतकार ने कहा कि पवित्रता मनुष्य की पहचान है, जो मन, वचन व कर्म से पवित्र है वही सच्चा है और उसे ही महापुरुष कह सकते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य को अपनी ईमानदारी नहीं छोड़नी चाहिए। धन व अन्य वस्तुएं के नष्ट हो जाने पर भी हमें अपनी ईमानदारी रूपी गहनें को हमेंशा धारण करना चाहिए। डॉ प्रभुदेव कुरले, परीक्षा नियंत्रक, सेन्ट्रल विश्वविद्यालय, झारखंड ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान की बहनों ने आध्यात्म की अमृतवर्षा करके जो अर्तजगत की यात्रा करायी है उससे जगत में हिंसा की भावना में कमी आयेगी।

व्यापार में सच्ची सफलता का एकमात्र कारण पक्ष-विपक्ष, हार और जीत में समान रहना है-बीके अंजु

સફળ વ્યાપારથી
સફળ વ્યાપારથી

> ☑ हर व्यापारी का अंतिम लक्ष्य कम पूंजी और मेहनत से मुनाफा कमाना या एक सफल व्यापारी बनना होता है।

शिव आमंत्रण, राजकोट/गुज.। एक व्यापारिक दुनिया जो भारत के विकास का सम्मान करती है, जो देश की रीढ़ है। इसमें भी राजकोट में दुकानदारों से लेकर, कारखानों, उद्योगों और कंपनी मालिकों तक कई व्यापारियों का बिजनेस हब है। हर व्यापारी का अंतिम लक्ष्य कम पूंजी और मेहनत से मुनाफा कमाना या एक सफल व्यापारी बनना होता है। किसी भी व्यवसाय की पूर्ण सफलता की कुंजी व्यापार में ईमानदारी, धैर्य, साहस, सद्भावना और सहयोग जैसे गुणों का समावेश है। सफलता एक यात्रा है, एक मंजिल नहीं है। हर परिस्थिति में स्वयं को स्थिर रखना ही जीवन की सच्ची सफलता है। स्वर्णिम भारत बनाने के लिए हमारा क्या सहयोग हो सकता है जिसे बीके अंजु ने सुंदर गतिविधि के साथ-साथ सफलता के सूत्र से सभी को अवगत कराया। आजादी के अमृत महोत्सव के अर्न्तगत राजकोट ब्रह्माकुमारीज बिजनेस विंग द्वारा व्यापारियों के स्नेह मिलन का शुभारम्भ बीके गीता द्वारा मेडिटेशन के साथ किया गया। राजकोट के अग्रणी व्यापारी तथा बीके नलिनी, गीता, अंजू, दक्षा के वरदहस्त से दीप प्रागट्य के साथ विश्व शांति का योगदान किया। एक समृद्ध और सफल व्यवसायी बनने के लिए जीवन में संतुलन बनाए रखने और जीवन में गुणों को अपनाने का दिव्य संदेश देता हुआ एक सुंदर नाटक प्रस्तुत किया गया। बीके कुमारियों ने स्वागत नृत्य के साथ सभी का वेलकम किया। कार्यक्रम का संचालन बीके विधि-विधान द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

प्राचीन धरोहरों के संरक्षण की तरह बुजुर्गों को भी संभालने की आवश्यकता

बुजुर्गों एवं बीके भाई-बहनों द्वारा दीप जलाकर मनाते हैप्पीनेस डे

शिव आमंत्रण। छतरपुर मप्र। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय छतरपुर द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के अंतर्गत वर्ल्ड हैप्पीनेस डे मनाया गया। उक्त कार्यक्रम में बीके कल्पना ने कार्यक्रम का उद्देश्य बताते हुए कहा कि आज वर्ल्ड हैप्पीनेस डे हम वृद्धजनों के साथ मना रहे हैं क्योंकि वर्तमान समय सभी लोग किटी पार्टी, सोशल मीडिया, टीवी प्रोग्राम को देखकर, हिल स्टेशन पर जाकर, मित्र संबंधियों से मिलकर अपनी खुशी ढूंढ लेते हैं लेकिन आज हमारे पास बुजुर्गों के लिए समय नहीं है हम थोड़ा समय भी उनके पास बैठकर उनसे अपनी खुशियां नहीं बांटते हमें लगता है कि नया जमाना है यह बुजुर्ग शायद हमें नहीं समझ पाएंगे और हम उन्हें अपने से दूर करते जाते हैं लेकिन हम यह नहीं समझते कि अपने परिवार से दूर रहकर वह और जल्दी मन से बूढ़े हो जाते हैं क्योंकि उन्हें अकेलापन अंदर से कमजोर कर देता है और वह अपने को उपेक्षित महसूस करने लगते हैं।

आज आवश्यकता है अपनी संस्कृति को पुनः मजबूत करने की

स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए अतिथि।

शिव आमंत्रण। झोझूकलां-कादमा (हरियाणा)-हरियाणा योग आयोग एवं आयुष विभाग द्वारा कर्टन राईजर कार्यक्रम के अंतर्गत योगा विषय पर आयोजित जिला स्तरीय दो दिवसीय विचार गोष्ठी में बीके वसुधा को बतौर विशिष्ट अतिथि आमंत्रित किया गया मुख्य अतिथि के रूप में अतिरिक्त जिला उपायुक्त डॉ मनीष नागपाल ने शिरकत की और कहा कि आज हम अपनी भारतीय संस्कृति को भूल रहे हैं और विदेशों में अपना रहे हैं। आज आवश्यकता है अपनी संस्कृति को पुनः मजबूत करने की और वह तभी संभव होगा जब हम चैरिटी बिगिंन्स एट होम की कहावत को चरितार्थ करेंगे। इस अवसर पर बीके वसुधा ने राजयोग का जीवन में महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला और गहन शांति की अनुभूति कराई। इस अवसर पर बीके वसुधा व ज्योति बहन को अतिरिक्त उपायुक्त डॉ मनीष नागपाल ने स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

‘मातृदेवो भव’ की परंपरा को हमें बरकरार रखना है

शिव आमंत्रण, मुंबई। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर यह कार्यक्रम स्वतंत्रता के 75 वर्ष पुरे हो जाने के अवसर पर पुरे देशभर में मनाया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन मुलुंड सबजोन द्वारा ठाणे के एनकेटी कॉलेज में किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर इस प्रोजेक्ट को स्पष्ट करनेवाली विडिओ फिल्म दिखाई। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई। तत्पश्चात बीके वीणा भाटिया ने शब्द सुमनों से सभी अथितियों का स्वागत किया। मधुबन के महिला विंग के हेड क्वार्टर कोओर्डीनेटर डॉ. सविता ने प्रमुख वक्ता के रूप में महिलओं के संपूर्ण विकास के लिए आध्यात्मिकता पर प्रकाश डाला। महिला भेदभाव तथा घरेलु हिंसा का शिकार बनी है। भारत देश में आदि काल से महिलओं का सम्मान किया जाता था। तब देश में राम राज्य था। फिर से रामराज्य लाने के लिए स्त्री-पुरुषों में समानता लानी होगी। आधुनिक महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहीं हैं। नर-नारी, नारी शब्द में दो मात्रा अधिक है जो कोमलता और शक्ति दर्शाते है। अपने गुणों में सक्षम होने के बावजूद आज की महिला दुःखी है, कमजोर है, असुरक्षित है। इन हालातों को सुधारने के लिए राजयोग का ईश्वरीय ज्ञान लेकर ध्यान करने की आवश्यकता है। इस प्रकार नारी के परिवर्तन से परिवार, समाज तथा देश का परिवर्तन होगा।

स्मृति चिन्ह तथा सन्मान चिन्ह देकर राष्ट्र गान के पश्चात सम्मानित करते हुए अतिथि।

आध्यात्मिक रहस्य] वर्तमान में स्वयं परमात्मा सत्य गीता ज्ञान दे रहे हैं.........

परमपिता शिव परमात्मा का सत्य ज्ञान ही सर्व समस्याओं का निवारण है-बीके कंचन

कथा को संबोधित करते हुए बीके कंचन तथा नीचे श्रोता के रूप में उमड़ी भीड़।

शिव आमंत्रण, मंझौल/बेगूसराय/ बिहार। मंझौल जयमंगला की धरनी पर श्रीमद भगवत कथा का आध्यात्मिक रहस्य कार्यक्रम का आयोजन बड़े ही भव्य तरीकों से मनाया गया। हजारों की संख्या में भक्तगण श्रद्धालुगण ने श्रीमद भगवत कथा का रसपान किया। राजयोगिनी बीके कंचन दीदी ने मंझौल वासियों को श्रीमद भगवत कथा का अध्यात्मिक रहस्य बताते हुए कहा कि वर्तमान समय स्थितियों को देखते हुए हम सभी को श्रीमद भगवत कथा के ज्ञान अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए उन्होंने कथा के दौरान संगीतमय तरीकों से लोगों को यह संदेश दिया कि परमात्मा का सत्य ज्ञान ही सर्व समस्याओं का निवारण है। कथा में राजा परीक्षित की कहानियों को बताते हुए कहा कि राजा के जीवन से हमें यही सीखना चाहिए कि जब शरीर छोड़ें तो उस परमात्मा की याद, ईश्वरीय सेवाओं में अपने जीवन को सफल कर छोड़े। जिस प्रभू ने सृष्टि रचा है वही सृष्टि चला रहे हैं। अपने गीतों के द्वारा जन-जन को यह संदेश दिया कि इस सृष्टि को चलाने वाला परमात्मा है इसलिए उस परमात्मा के सानिध्य का अनुभव करो, श्रीमद भगवत कथा यही सिखाती है। राजा बलि और वामन अवतार का उन्होंने बहुत ही सुंदर रहस्य बताया कि परमात्मा गुप्त वेश में सतयुग दुनिया की स्थापना कर रहा है इसलिए इस संसार में महापरिवर्तन का दृश्य हम सभी देख रहे हैं। समय रहते हम सभी स्वयं का परिवर्तन, स्वयं का बदलाव, सकारात्मक दृष्टिकोण और भगवान की श्रीमत का हम सभी को अनुसरण करना होगा तभी यह सृष्टि का उद्धार होगा। हम अपने अंतर्मन और आंतरिक शक्तियों को जागृत कर विश्व परिवर्तन का कार्य सहज कर सकते हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ ने किया निःशुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन

GIVE BLOOD
SAVE LIFE

बड़ौदा, अटलादरा। अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज संस्था के अटलादरा सेवाकेंद्र द्वारा निःशुल्क चिकित्सा जांच शिविर, नाड़ी परीक्षण और रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में शहर के आम लोगों के साथ-साथ ग्रामीण नागरिकों, महिलाओं ने भी भारी संख्या में लाभ लिया। इस शिविर का उद्देश्य स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बनाना और आम लोगों को रक्तदान के लिए प्रोत्साहित करना। इस शिविर के दौरान रोजाना 1 से 6 बजे तक महिलाओं के लिए पैप परीक्षण निःशुल्क किया गया।

दादी जानकी का स्मृति दिवस मनाया

संभल उप्र। ईश्वरीय सौगात से स्वागत कर तथा दीप जलाकर भाजपा नगर अध्यक्षा शिल्पी गुप्ता को सम्मानित करते हुए बीके सरला तथा कामिनी।

सर्वोच्च परमात्मा और आत्मा का मिला व्यावहारिक ज्ञान

शिव आमंत्रण, ठाणे महाराष्ट्र। महिला दिवस पर करीब 80 महिलाओं को स्वास्थ्य व्यायाम लाभ लेने के लिए प्रशिक्षण दिया गया। डॉ शुभदा नील ने सबके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और सुखी जीवन जीने के बारे में बात की। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सीता ने राजयोग ध्यान का ज्ञान के साथ सर्वोच्च परमात्मा और आत्मा का व्यावहारिक ज्ञान दिया।

संत नागाशिव को मिला ईश्वरीय सौगात और संदेश

शिव आमंत्रण, बाढ़/बिहार। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र गोपीनाथ मंदिर बाढ़ बाज़ार के पास ओम् शांति भवन में कार्यक्रम कर वैश्विक आध्यात्मिक जागृति दिवस मनाया। कार्यक्रम में सेवाकेंद्र संचालिका बीके ज्योति, श्री बाल शनि धाम मंदिर बाढ़ के संस्थापक नागा शिव जी मुनि उदासीन, संस्था के वरिष्ठ भाई बीके विपिन और बाढ़ के वरिष्ठ लोग दादी जानकी को पुष्पांजलि अर्पित किया। शहर की हजारों भाई बहन श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

प्रशासन में आध्यात्मिक गुणों के समावेश से प्रशासक बन जायेंगे दिव्य

आजादी के अमृत महोत्सव से
स्वर्णिम भारत की ओर

बिजावर मप्र। उपसेवा केंद्र बिजावर की बीके पाठशाला किशनगढ़ में आज आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के तहत वन विभाग टाइगर रिजर्व किशनगढ़ बफर कार्यालय में वन विभाग अधिकारियों के लिए प्रशासन में दिव्यता विषय पर हुआ कार्यक्रम का सफल आयोजन। कार्यक्रम की सुंदर शुरुआत प्रभु स्मृति गीत के साथ बीके शिल्पा ने की। साथ में बीके रचना ने संस्था का संक्षिप्त परिचय देते हुए 20 विंग गतिविधियों का अवलोकन कराया। जब हम अपने प्रशासन में आध्यात्मिक गुणों का समावेश करते है तो हमारे यह प्रशासक दिव्य प्रशासक बन जाते हैं।

आर्ट गैलेरी ‖ ब्रह्माकुमारीज आगरा आर्ट गैलरी म्यूजियम द्वारा तनाव प्रबंधन ....

सीआईएसएफ के अधिकारियों ने सीखा राजयोग ध्यान

तनाव प्रबंधन शिविर में भाग लेते हुए सीआईएसएफ जवान तथा बीके भाई बहन।

शिव आमंत्रण, आगरा उप्र। आज की इस दौड़ती भागती जिंदगी में मनुष्य अपने लिए टाइम नहीं निकाल पाता, लेकिन सहज राजयोग के अभ्यास से हम अपनी दैनिक जीवन में मेडिटेशन को शामिल कर सकते हैं। इसके लिए हमें स्ट्रेस के कारणों को जानना होगा। बीके माला ने बताया की परमात्मा इस धरा पर आकर हमें भारत का प्राचीन योग सिखाते हैं। आज दुनिया में जो युद्ध चल रहा है उससे पूरी दुनिया में डर व तनाव बना हुआ है। इसलिए इस कठिन समय में हमें अपनी आत्मा को शत-शत और शक्तिशाली बनाना है जिसके लिए नित्य मेडिटेशन अभ्यास की आवश्यकता है। बीके संगीता ने भारत का प्राचीन राजयोग और योगा में अंतर बताया। जैसे शरीर की बीमारी इसलिए होती है क्योंकि शरीर का इम्यूनिटी स्तर नीचे होता है। वैसे ही जब मन बुद्धि की इम्युनिटी कम होती है तो तनाव और स्ट्रेस हावी हो जाता है। जिसके कारण मनुष्य आत्मा कमजोर थकी हुई अनुभव करती है। आज बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक सबको स्ट्रेस है। यह स्ट्रेस बढ़ते-बढ़ते टेंशन का रूप ले लेता है। स्ट्रेस को कम करने के लिए बीके संगीता ने कुछ रीक्रिएशनल एक्टिविटीज कराई, आत्मा और परमात्मा का परिचय दिया। योग के माध्यम से कैसे कनेक्शन जोड़ा जाता है यह विस्तार में बताया। बीके गीता ने स्ट्रेस कम करने के लिए और दैनिक जीवन में मेडिटेशन शामिल करने के लिए मेडिटेशन कमेंट्री द्वारा एक स्ट्रेस फ्री एनवायरोमेंट बनाया।

शिविर में 60 लोगों ने किया रक्तदान

कोल्हापुर महाराष्ट्र। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के एक कार्यक्रम अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के उदघाटन में शामिल आदरणीय बीके सुनीता, डॉ.राजेन्द्र चिंचणीकर, बाबा साहेब आगाव, डॉ. सुधा पाटील, बीके संजीवनी कोल्हापुर प्रतिनिधि मौजूद रहे। 60 से अधिक लोगों ने रक्तदान किया। शिविर में अर्पण ब्लड बैंक और रुतिका ल्यबोरेटरी दो संस्था का सहयोग मिला। आजादी का अमृत महोत्सव अन्तर्गत भारत सरकार और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा इस शिविर का आयोजन हुआ।

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)

पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

एकाग्रता से मन-बुद्धि को परमात्मा में लगाना ही साधना है

» शिव आमंत्रण, आबू रोड । सच्ची साधना करनी है तो अपने लिए समय निकालकर चलना चाहिए। ऐसे नहीं कि मन हमारा चंचल हो जाए और कोई कारण से हम नीचे आ जाएं, वह अपने वश में तो मन नहीं हुआ ना। मन के वश होकर हम नीचे न आये बल्कि मन को अपने वश में करके जहां चाहे, जितना समय चाहे और जिस स्थिति में चाहें स्थित हो जाएं। कभी-कभी हमारी रुचि होती है सूक्ष्मवतन में ब्रह्माबाबा, शिवबाबा से अव्यक्त रूप में अव्यक्त मुलाकात करें, तो वहां भी हलचल नहीं हो, एकाग्रता हो। एकाग्रता में मन को एकदम ऐसा स्थित करो जो मन हलचल में न आ जावे। ऐसी साधना ही जैसे कर्मातीत अवस्था की निशानी है। कर्मातीत का भी अर्थ है- कर्म करते हुए कर्म के बन्धन में नहीं लेकिन कर्म को अपने बन्धन में चलाने वाले, करने वाले। जैसे कहां कोई बहुत सेवा किया, मेला किया, प्रदर्शनी की या नई सेवा करके आये फिर योग में बैठे तो और कोई संकल्प नहीं आयेगा लेकिन बार-बार वह सेवा का संकल्प ऐसे हुआ, बहुत अच्छा, यह भी होता तो बहुत अच्छा होता, हां, यह करते तो बहुत अच्छा होता... व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा लेकिन सेवा का संकल्प चलता रहेगा। अभी उस समय वह सेवा का संकल्प भी वास्तव में व्यर्थ है क्योंकि जिस लक्ष्य से हम योग करने के लिए बैठे, उस समय अगर हमको सेवा का संकल्प भी नीचे लाता है, जिस स्थिति में मैं टिकना चाहती हूं उस स्थिति से नीचे आ गये तो वास्तव में ज्ञान के हिसाब से मन के ऊपर जो हमारी कण्ट्रोलिंग पावर चाहिए वह तो नहीं हुई ना! इसीलिए साधना का अर्थ है एकाग्रता से उस श्रेष्ठ स्थिति में रहना। तो अभी से साधना का अभ्यास करो, साधन हमको खींचे नहीं। साधन, साधना को हिलावें नहीं। ऐसे नहीं कि साधन यूज़ नहीं करो, यूज़ तो करना भी पड़ता है लेकिन हमारा मन खींचे नहीं। जैसे हम दूसरों को मिसाल देते हैं कि कमल पुष्प के समान रहो। जैसे कमल पुष्प कीचड़ में रहता है, पानी में रहता है लेकिन पानी की एक बूंद भी उसको स्पर्श नहीं करती है, मिट्टी में होते हुए भी वह न्यारा रहता है। ऐसे साधनों को यूज़ करने के लिए कोई मना नहीं है लेकिन साधनों का हमारे मन पर ऐसा प्रभाव नहीं होना चाहिए जो साधन नहीं हो तो हमारी स्थिति भी नीचे ऊपर हो जाए। मानो अन्त के समय यह सब साधन जो हैं वह खुद ही हिलेंगे, परिस्थितियां ही बदली हुई होंगी, प्रकृति ही ऐसा पेपर लेगी जो साधन होते हुए भी यूज़ नहीं कर पायेंगे। तो ऐसे साधन भी धोखा दे सकते हैं। इसलिए साधन होते हुए भी हमारे मन के स्थिति को हिलावें नहीं, बिल्कुल जैसे कमल पुष्प समान रहें। यूज़ किया, आनन्द लिया और अगर नहीं हैं तो उसमें हलचल में नहीं आवे- ऐसी स्थिति को कहा जाता है - साधना।

क्रमशः.....

सब का धर्म एक है, वह है आत्मा का स्वधर्म

☑ अंग्रेज सरकार के अधिकारियों को भी अभय होकर स्पष्ट शब्दो में यह सत्यता बताई ताकि कल को कोई यह उलहना न दे सके कि.........

» शिव आमंत्रण, आबू रोड । किन्तु नारी को देखो, वह पति के मर जाने पर कितनी रोती है। वह प्रायः दूसरा विवाह नहीं करती और कहीं-कहीं तो विधवा नारी पति की चिता पर बैठ कर सती भी हो जाती है। अतः नारी के लिए अब ज्ञान-चिता पर चढ़ना सहज है। संन्यासी लोग नारी को जीते-जी विधवा बना कर घर छोड़ कर जंगल में चले जाते हैं और फिर उपदेश करते हैं कि पति ही नारी का गुरु भी है और परमेश्वर भी। इस प्रकार माताओं का तिरस्कार होता देखकर बाबा को उनके उत्थान के लिए सदा ध्यान रहता था। उन्होंने मम्मा अर्थात् ओम् राधे द्वारा अखिल भारतीय महिला समाज की प्रधान, 'रानी रजवारे' के नाम ग्वालियर में जो एक पत्र लिखवा कर भेजा, उसके निम्नलिखित अंश पढ़ने के योग्य हैं- ''....प्रिय सखी, पति को पत्नी का 'गुरु' अथवा 'ईश्वर' कहा जाता है परन्तु 'ईश्वर' तो निर्विकार और परम पवित्र है। तब क्या आज पति निर्विकार होता है? 'गुरु' का कार्य तो परमात्मा का साक्षात्कार कराना अथवा आत्मानुभूति कराना होता है परन्तु आज पति तो देह-अभिमान में फसाता है। अतः स्पष्ट है कि आज का विकारी पति गुरु अथवा ईश्वर नहीं है। आप तो माता हैं। अब आप लक्ष्मी के समान बनो और नर-नारी को ज्ञानमृत पिलाओ! प्रिय सखी, अब जागो, स्वयं को पहचानो, उसके बिना जीवन ऐसा है कि जैसे अंधेरे में कूदना....'' सन् 1939 में एक अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म सम्मेलन लंका के कोलम्बो नगर में हुआ था। उसमें सभी धर्मों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। उस सम्मेलन का उद्देश्य विश्व में शान्ति स्थापित करने के तरीकों पर विचार करना था। तब बाबा ने उन धर्म-प्रचारकों को एक तार भिजवाई थी और पत्र (यह पत्र दिनांक 1 अगस्त, 1938 को भेजा गया था) भी लिखवाया था, जिसका सारांश था- ''.....जब तक विश्व का हरेक व्यक्ति स्वयं को नहीं जानता अर्थात् आत्मानुभूति नहीं करता और आत्म-निश्चय-बुद्धि होकर कर्म नहीं करता तब तक विश्व में शान्ति का स्वप्न साकार नहीं हो सकता। वास्तव में धर्म एक है, वह है आत्मा धर्म अथवा स्वधर्म। पवित्रता और शान्ति ही सच्चा धर्म है। आज जो अनेक धर्म हैं, उन्होंने तो कलह और लड़ाई-झगड़े पैदा किये हैं। जब तक मनुष्य आत्मा का अनुभव नहीं करता तब तक सही मायने में वह इन्सान ही नहीं बल्कि हैवान है और जब तक वह हैवान है तब तक शांति नहीं हो सकती ...... मैं आपको ईश्वरीय ज्ञान रूपी रत्नों का खज़ाना भेज रही हूं। आप इसे पढ़ना....।''

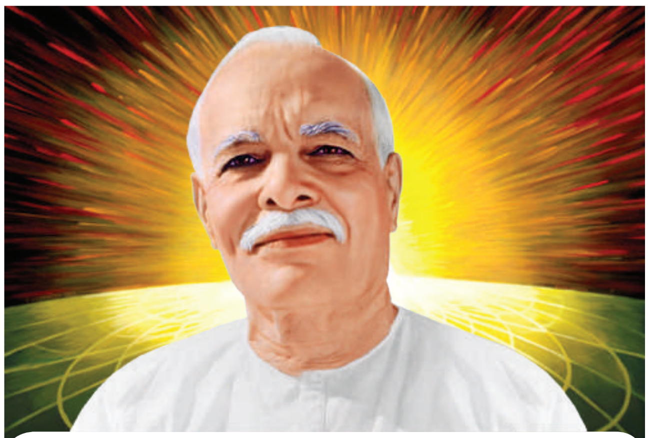

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

☑ प्रभु इस सृष्टि में आये परन्तु हमें सूचना भी न मिली ये कोई ना कहे........

राजाओं-महाराजाओं आदि को पत्र तथा ईश्वरीय-साहित्य

इस प्रकार बाबा सभी को ईश्वरीय ज्ञान द्वारा लाभान्वित करने का प्रयत्न निरन्तर करते रहते। उन्होंने जामनगर, जोधपुर, मण्डी आदि के महाराजाओं को भी पत्र (ये पत्र फरवरी और मार्च, 1944 को भेजे गये थे) लिखावाये और उन्हें ईश्वरीय ज्ञान से सम्बन्धित चित्र भी भिज़वाये, साहित्य भी भिजवाये तथा इस ईश्वरीय विद्यालय में आकर एक सप्ताह तक इसे स्पष्ट रीति से समझने के लिए निमंत्रण भी दिया। सभी के यहां से साहित्य तथा निमंत्रण के पहुंच के पत्र भी आये परन्तु ''कोटि-कोटि मनुष्यों में से कोई विरला ही तो इस ज्ञान से लाभ उठाता है। बाकी सब तो आश्चर्यवत् होकर इसे पढ़ते और सुनते हैं'' - ये वाक्य तो श्रीमद्भगवद्गीता में स्पष्ट आये हैं। बाबा ने तो 'ओम् राधे' जी द्वारा विभिन्न चेम्बर ऑफ कॉमर्स को, पारसी, ईसाई, आदि-आदि सभी धर्मों की सभाओं को भी पत्र भिजवाये। विदेशों में भी विशिष्ट व्यक्तियों को बाबा ने ईश्वरीय निमंत्रण तथा साहित्य भेजा और उनसे उत्तर भी आये परन्तु उन अभागों ने यह नहीं पहचाना कि यह तो सभी आत्माओं की परमपिता ने हमें 'स्वयं को जानने' और विश्व का स्वराज्य पाने के लिए अलौकिक निमंत्रण दिया है। **क्रमशः.....**

झूठी बातों से खुद को फ्री रखना अर्थात् अपने ऊपर आपेही कृपा करना है

प्रेरणापुंज

दादी जानकी

पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

☑ अन्तिम घड़ी हमारी स्थिति कैसी रहे यह बात न भूलें...

» शिव आमंत्रण, आबू रोड । हम सबकी एकता को देख, ईश्वरीय स्नेह को देख जो संसार में कहीं भी नहीं है, वह यहां है। इतना अन्दर से एक दो की विशेषता को देख बाबा के गुण गायें। बाबा हरेक बच्चे को कहां-कहां से चुन लिया है। हमारी नजरों में इतना स्नेह हो, वृत्ति में इतनी सच्चाई हो। हमारी घर जाने की इतनी तैयारी हो, कर्मातीत अवस्था का अनुभव यहां करें, कर्मातीत बन करके तुरन्त भाग न जायें। कर्मातीत स्थिति में यहां भी रह सकते हैं। किसी का कोई भी बन्धन नहीं हो, जीवनमुक्ति का यहां अनुभव करें। सतयुग की जीवनमुक्ति और संगमयुग की जीवनमुक्ति में रात-दिन का अन्तर है। सतयुग में तो जीवन में कोई बन्धन है ही नहीं, यहां बन्धनों से मुक्त रहकर जीवनमुक्त अवस्था को पाया हुआ है। बाबा वर्से में दें रहा है, बन्धनों से मुक्त हो जाओ तो जीवन में होते हुए भी जीवन मुक्त हैं, बाबा के साथ हैं। सतयुग में साथ नहीं होंगे लेकिन यहां बाबा के साथ हैं, यह हमारी अन्त मति सो गति हो। ऐसे बाबा के साथ चले जायें। फिर सतयुग की भी इतनी अच्छी तैयारी हो। पहले ऊपर जाना हो तो कैसे, नीचे आयें तो कैसे? यह तैयारी हम सबकी इतनी की हुई हो जो प्रभाव वह वातावरण औरों को भी घर की याद दिलाये। सारे यज्ञ की हिस्ट्री के अन्दर आदि से ले करके यह बाबा के बनके रहें, बाबा से सच्चे रहें। कोई लोभ है, कोई मोह है अन्दर छिपायें नहीं निकालें। सच बोलना सीखें, श्रीमत पर चलें। जो बाबा ने कहा वह करना ही है, यह कितनी अच्छी और सहज बात है, इससे सुख मिलता इलाही है। गाने वाले एक और अनुभव करने वाले हम। तो अभी हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझो। अन्तिम घड़ी हमारी स्थिति कैसी रहे यह बात न भूलें। अगर यह बात भूल जाते हैं तो यह भी एक भी एक बहुत बड़ी भूल है। यह अन्तिम घड़ी है तो हर घड़ी सफल हो जाये। समय को भी सफल करना है। सारी लाइफ को सामने रखो तो पता चलेगा हमने कितना सफल किया है। फालतू बातों में, फालतू चिंतन में न संकल्प चले हैं, न कभी संशय आया है, न आ सकता है। ड्रामा के हर सीन को देख, प्रभू की लीला को देख गुण गाये हैं तो हमारा समय, श्वांस सब सफल हो गया और आगे भी ऐसे ही सफल होता रहेगा। तो माला में खुद अच्छे नम्बर में आना, औरों को जल्दी खींचना, बाबा की माला बनाके बाबा के हाथ में देना, ईश्वरीय डोर को इतनी मजबूत रखना - यह किसका काम है। तो जब कभी भी सेवा के बारे में संकल्प चलता है तो हमको आता है कि वास्तव में हमारी सेवा क्या है? हम क्या सेवा करूं या हम क्या सेवा कर सकते हैं। भाषण करना सेवा है या किसी वीआईपीज की सेवा करना सेवा है, जो भी सेवाओं के प्रोग्राम बनते हैं यह सब बहुत अच्छे हैं परन्तु हरेक अपने से व्यक्तिगत पूछे कि मेरी सेवा क्या है? स्व के स्थिति को सदा ऊंचा, अच्छा रखना, बाबा को अपना बनाके रखना उसमें सेवा हैं। जो संग, सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे उनकी वही गति हो जायेगी, जो मेरी गति हुई है। तो हमारी अन्तिम स्थिति ऐसी हो, तैयार रहो। जैसे बाबा, मम्मा... कैसे तैयार रहे हैं। हमको भी उन्हों को देख, उन जैसी स्थिति बना करके आगे बढ़ते रहना है। न कि अपनी स्थिति को सदा ऊपर नीचे करते रहें, औरों का चिंतन करते रहें, कोई सच बोलता है, झूठ बोलता है तो हम क्यों उन बातों में जायें? ऐसी बातों से अपने को फ्री रखना माना मुक्त रखना अर्थात् अपने ऊपर आपेही कृपा करना है। दूसरों के चिंतन में जाना या और मुझे कैसे देखते हैं,.. अरे तुम अपनी रूहानी स्थिति में रहो तो सब ऐसे देखेंगे। रूहानियत की राह में रहने का जो प्रभाव है वह औरों को मिलेगा।

क्रमशः ...

परमात्म प्रत्यक्षता का माध्यम बनेगा बैतुल का भाग्य विधाता भवन-बीके मृत्युंजय

दिनांक - 21 मार्च 2022
ब्रह्माकुमारीज़ बैतुल
आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर
ब्रह्माकुमारीज़

» **शिव आमंत्रण, बैतुल मप्र ।** ब्रह्माकुमारीज़ के बैतुल सेवा केंद्र पर नव निर्मित भवन भाग्यविधाता के विशाल सभागार में नये भवन एवं आज़ादी के अमृत महोत्सव संपन्न हुआ। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव राजयोगी बीके मृत्युंजय, भोपाल ज़ोन की निर्देशिका राजयोगिनी अवधेश, राजयोगिनी उषा, माउंट आबू, माननीय सांसद डीडी उइके बैतुल, विधायक निलय डागा बैतुल, विधायक योगेश पंडाग्रे, आमला, पुलिस अधीक्षक सिमाला प्रसाद एवं भोपाल ज़ोन की सभी वरिष्ठ बहनें एवं भाई मुख्य रूप से उपस्थित थे। राजयोगी बीके मृत्युंजय ने अपने वक्तव्य मे कहा कि भाग्यविधाता परमात्मा पिता ने आपने संकल्पों से भाग्यविधाता भवन का निर्माण करवाया है। एक छोटे स्थान पर थोड़ी सी जगह में इतना सुव्यवस्थित भवन बनना ये परमात्म आशीर्वाद से ही संभव है। इस नए भवन का उद्घाटन ईश्वरीय सेवाओं को नया आयाम देगा और निश्चित ही परमात्म प्रत्यक्षता का साधन बनेगा। आज आजादी के अमृत महोत्सव पर हम संकल्प लें कि हम क्रोध मुक्त, ईर्ष्या द्वेष मुक्त भारत को बनायें, क्योंकि परमात्मा पिता का अवतरण स्वर्णिम भारत के निर्माण के लिए हुआ है।

विधायक को दिया ईश्वरीय संदेश

» **शिव आमंत्रण, अकबरपुर (यूपी) ।** बीके सोमा, विधायक राम अचल राजभर को ईश्वरीय संदेश देकर ईश्वरीय उपहार भेंट करते हुए बीके सरिता, बीके विशाल और बीके शिवनायक भी नजर आए।

वर्ल्ड होम्योपैथिक डे पर लोगों ने सीखा मेडिटेशन

» **शिव आमंत्रण,नीलबड़/ भोपाल/मप्र।** आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'वर्ल्ड होम्योपैथिक डे' के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़, पंचवटी, भोपाल द्वारा' हेनीमन होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज में ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग द्वारा विहासा कार्यक्रम का सुंदर आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सकारात्मकता के विषय पर एक्टिविटीज के माध्यम से डॉक्टर प्रियंका एवम बी के साक्षी, द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में डायरेक्टर हमीद शकील, प्रिंसिपल डाक्टर निशा शेख एवम् कल्चर इंचार्ज डॉक्टर शिवानी बडोले भी शामिल हुए एवं उन्होंने कार्यक्रम की सराहना की। जहां लोगों को ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के राजयोग मेडिटेशन के बारे में बता कर उसका अभ्यास भी करवाया। कार्यक्रम सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नीता के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस मौके पर बीके राम, बीके हेमा, बीके डॉ. संजीव सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

अनिश्चितता के इस दौर में हर समस्या का समाधान स्वयं के भीतर छिपा हुआ है-बीके आशा

- ☑ मुल्यों पर आधारित व्यापार ही सफलता का आधार
- ☑ आंतरिक शान्ति एवं स्थिरता से ही बाहरी परिस्थितियों का सामना
- ☑ दूसरों को नियंत्रण करने से पहले खुद को नियंत्रित करो।

» **शिव आमंत्रण, गुरुग्राम हरियाणा।** वर्तमान समय जिस प्रकार से अनिश्चितताओं का दौर चल रहा है। उसमें पता नहीं लगता कि जीवन में कब कौन-सी परिस्थिति आ जाये। ऐसे समय पर व्यक्ति की इच्छा शक्ति ही उसका साथ देती है। उक्त विचार ओआरसी की निदेशिका आशा ने ब्रह्माकुमारीज़ के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के अंतर्गत, ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर में आयोजित कार्यक्रम की लॉन्चिंग में व्यक्त किये। 'अनिश्चितता के दौर में समाधान स्वयं के भीतर' विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जितना हम अंदर से शान्त होते हैं, उतना ही चीज़ों को अच्छी तरह समझ पाते हैं। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक चेतना से ही मन शांत और स्थिर होता है। उन्होंने कहा कि व्यापार जितना ही मूल्य आधारित होगा, उतना ही सफलता प्राप्त होगी। मेरे सामने चाहे कैसी भी चुनौती आती है लेकिन मैं उसका सामना बड़ी ही शान्ति और स्थिरता से करता हूं। डॉ. देव प्रकाश गोयल, सह-अध्यक्ष, एमएसएमइ, पीएचडी, चैंबर ऑफ कॉमर्स इंडस्ट्री ने कहा कि सफलता का असली अर्थ है कि जब आप पीछे मुड़के देखते हैं और आपके चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाती है। आपसे बात करके किसी के चेहरे पर मुस्कान आ जाये। ये वही कर सकता है जो अन्दर से शक्तिशाली है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ इन्हीं मूल्यों को लेकर चल रही है। इनका उद्देश्य ही हरेक के जीवन को सुख-शांति संपन्न बनाना है। बीके शिवानी ने अपने प्रेरणादाई संबोधन में कहा कि हम बाहरी चीजों को तभी कंट्रोल कर सकते हैं, जब पहले स्वयं को कंट्रोल करना सीख जाएं। उन्होंने कहा कि हम जो सुनते हैं, पढ़ते हैं, देखते हैं, उससे ही हमारी सोच बनती है। जब हमारे अंदर की दुनिया अच्छी होती है, तब ही बाहरी दुनिया अच्छी बनती है।

वैश्विक जागृति दिवस पर किया दादी जानकी को याद

» **शिव आमंत्रण, रीवा मप्र।** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय शांति धाम झिरिया रीवा में आदरणीय दादी जानकी जी की द्वितीय पुण्य स्मृति को *वैश्विक अध्यात्मिक जागृत दिवस* के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर सभी बीके भाई बहनों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए एवं संस्थान की तरफ से बीके नम्रता ने दादी जानकी जी के अलौकिक जीवन परिचय से सभी भाई बहनों को अवगत कराया और संस्थान के वरिष्ठ प्रवक्ता राजयोगी बीके प्रकाश ने अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू से जारी आदरणीय दादी जी के जीवन से प्रेरणादाई स्मरणों को साझा किया। वही सभी भाई बहनों ने भी अपने हृदय के भावों को दादी जी के लिए प्रकट किए। इसके तत्पश्चात बाबा व दादी जी को भोग भी स्वीकार कराया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से पूर्व महापौर श्री शिवेंद्र सिंह, प्रोफेसर ऊषा किरण भटनागर, बीके प्रमोद, बीके ज्योति, बीके बिंदु सहित कई लोग मौजूद रहे।

राजयोग जीवन को तनावपूर्ण स्थिति से आनंदपूर्ण स्थिति में बदल देता है-बीके मीनाक्षी

» **शिव आमंत्रण, लुधियाना पंजाब।** ब्रह्माकुमारीज़ ज्यूरिस्ट विंग (आरई एंड आरएफ)और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के साथ ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर विश्व शांति सदन लुधियाना ने पूज्य राजयोगिनी डॉ. दादी जानकी जी के द्वितीय स्मृति दिवस पर एक श्रद्धांजलि कार्यक्रम आध्यात्मिक जागृति दिवस मनाया। न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं, चार्टर्ड अकाउंटेंट और कंपनी सचिवों जैसे लगभग 100 पेशेवरों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मुख्य अतिथि न्यायाधीश केके करीर अध्यक्ष उपभोक्ता न्यायालय, श्री आरके शर्मा अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश, श्री आशीष अबरोल अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश, एनआईआरसी सदस्य सीए शालनी गुप्ता, सीए दिनेश शर्मा और वरिष्ठ सदस्य सीए श्री आरडी खन्ना उपस्थित थे। ब्रह्माकुमारीज़ लुधियाना सब-ज़ोन इंचार्ज, बीके सरस्वती की गरिमामयी उपस्थिति में सभी पेशेवरों द्वारा 'स्वर्णिम भारत की स्थापना में न्यायविदों की भूमिका' अभियान की शुरुआत करके एक सच्ची श्रद्धांजलि दी गई। बीके सरस्वती ने अपने अनुभव साझा किए। राजयोगिनी दादी जानकी जी का जीवन इतिहास और इस दिव्य ज्ञान को विभिन्न देशों में फैलाने में उनके योगदान को एक सुंदर वृत्तचित्र फिल्म के माध्यम से बताया गया। बीके मीनाक्षी ने उन दिव्य शक्तियों के बारे में चर्चा की जो न्यायविदों के लिए स्वर्णिम भारत की स्थापना में आवश्यक होंगी। मेडिटेशन के महत्व को बताते हुए उन्होंने बताया कि यह तनावपूर्ण जीवन को तनाव मुक्त में बदल देगा और इसकी मदद से हम अपने जीवन को सही दिशा में ढाल सकते हैं।

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

☑ शिव बाबा कहते हैं स्वदर्शन चक्रधारी होने से पाप भी कटेंगे।

पिछले अंक से क्रमशः

योग में पांच स्वरूप का अभ्यास जरूर करें

हम सभी ने बाबा की मुरलीयों में सुना है। स्वदर्शनचक्र घुमाने से तुम्हारे पाप कट जायेंगे। मनमनाभव होने से पाप कटेंगे। बीजरूप से पाप कटेंगे। तो स्वदर्शनचक्रधारी होने से भी पाप कटेंगे। तो पांचों स्वरूपों का अभ्यास स्वदर्शनचक्र का अभ्यास है। रोज सुबह यदि उठकर पांच स्वरूपों का अभ्यास पांच बार कर लिया जाये तो सभी समस्याएं समाप्त हो जायेंगी। याद कर लें अनादि स्वरूप निराकार आत्मा, दूसरा आदि स्वरूप देव स्वरूप, तीसरा पूज्य स्वरूप, ब्राह्मण स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप। हर एक के साथ हम थोड़ी-थोड़ी कमेन्ट्री दें अपने को, बड़ी कमेन्ट्री भी दी जा सकती है। खुद को पहले छोटी से शुरू करें। तीन-तीन सेकेण्ड, फिर पांच-पांच सेकण्ड और फिर दस-दस सेकण्ड। मैं आत्मा हूं मुझसे चारों ओर किरणें फैल रही है शान्ति की, तीन सेकण्ड के लिए देखें इसको। मैं देवता हूं सतयुग में डबल ताजधारी। देव युग में ले चलें अपने को तीन सेकण्ड के लिए। मैं इष्ट देव मैं इष्ट देवी मन्दिर में हूं। ये बहुत अच्छा स्वरूप है। मेरे सामने हजारों भक्त और मैं अपनी दृष्टि से, हाथ से सभी को शान्ति के वायब्रेशन्स दे रही हूं। बहुत अच्छा अनुभव होगा। चौथा ब्राह्मण स्वरूप के लिए हमें किसी न किसी स्वमान में स्थित होना है। मैं आपको बहुत सिम्पल सी बात बता रहा हूं कि हम लोगों ने पिछले एक मास में इसका बहुत अभ्यास किया। सवेरे उठते ही आप पहला संकल्प कर लें कि बाबा मेरा सद्गुरू है। और सद्गुरू ने अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिया। सद्गुरू का वरदानी हाथ आ गया मेरे सिर पर और उसके हाथ से निकलने लगी रंग बिरंगी किरणें जो हमारे सारे शरीर में फैलने लगी है। एक मिनट तक ले आओं अपने को इस स्वरूप में। सर्वशक्तिमान की शक्तियां ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर द्वारा आत्मा में और हमारे पूरे शरीर में फैलने लगी है। ब्राह्मण स्वरूप का ये अभ्यास करें। फिर मैं फरिश्ता हूं लाईट के शरीर में हूं। इसको रिपीट करें। दूसरी बार करें। तीसरी बार करें। चौथी बार, पांचवी बार। एकाग्रता बहुत अच्छी हो जायेगी। नींद सवेरे आती है ओ समाप्त हो जायेगी। और योग करने को मन करेगा। परमधाम की स्थिति जिसको बीजरूप ज्वाला स्वरूप कहते हैं। पावरफूल मुक्त स्थिति कहते हैं। बन्धनों से मुक्त। मैं आत्मा परमधाम में हूं बाबा के साथ बस बाबा की किरणें मुझमें समा रहीं है। इसके अलावा ज्यादा संकल्प नहीं किरणें लेते रहना। संकल्प हमारे तब शांत हो जाते हैं जब हमारी बुद्धि स्थिर हो जाती है। बुद्धि से हम विजुअलाईज कर रहे हैं। सर्वशक्तिमान की किरणें आ रही है। मन शान्त हो जायेगा। उतना ही योग शक्तिशाली होगा। मन में ज्यादा संकल्प होंगे योग कम शक्तिशाली होगा। ये परमधाम की स्थिति अभ्यास के द्वारा प्राप्त हो जाती है। जैसे-जैसे इसका अभ्यास करेंगे वैस-वैसे ज्यादा से ज्यादा समय हम परमधाम में बाबा के साथ रहने का अनुभव कर सकेंगे। इसके अलावा एक दूसरी स्थिति बहुत अच्छी है। आप ऐसा अभ्यास करें। मैं फरिश्ता ग्लोब के ऊपर बैठा हूं। धरती के गोले के ऊपर सर्वशक्तिमान बाबा मेरे सिर के ऊपर छत्र है। उसकी किरणें मुझमें समा रही है। कुछ देर अपने को इस स्थिति में स्थित करेंगे। फिर वे किरणें मुझसे चारों ओर फैल रही है। सारे विश्व में पहुंच रही है। कमजोर आत्माओं को बाबा की पावरफूल शक्तियां मिल रही है। थोड़ी-थोड़ी देर ऐसा अभ्यास करेंगे। एक-एक मिनट करना चाहिए फिर तीन मिनट फिर पांच मिनट। जब आपको एक घण्टा योग में बैठना हो तो भिन्न-भिन्न तरह का अभ्यास करें। दूसरा योग का अभ्यास बिल्कुल सरल हो और भी अपने को एक संकल्प देंगे। मैं मास्टर ज्ञानसूर्य हूं और ज्ञानसूर्य शिव बाबा की किरणें मुझ पर आ चारों ओर फैल रही है। इस स्थिति के बारे में बाबा के बहुत ही शक्तिशाली महावाक्य हैं। शक्तिशाली महावाक्य का अर्थ है ज्ञानसूर्य से शक्तियों की किरणें लेकर सारे संसार में फैलाना बाकि सभी कार्य निमित्त मात्र है। ज्ञानसूर्य की इन किरणों से माया के किटाणु नष्ट हो जाते हैं। इसे हम याद करेंगे।

कर्म भाग्य से बड़ा बुद्धि को श्रेष्ठता का प्रमाणपत्र मिला

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

☑ व्यक्ति के अच्छे कर्म का फल भी जमा होता जाता है जो उसे सुख के रूप में जीवन में मिलता है

अब उसे सारी लकड़ियों को शहर में ले जाना था और बेचना था। लेकिन न भाग्य का साथ था और न बुद्धि थी। आखिरकार वह जितना उठा सकता था उतना उठाया और बाकी के लिए सोचा कि वह एक गठरी बेचकर फिर आकर दूसरी गठरी को ले जायेगा। बाकी की लकड़ियों को सहेज कर एक कोने में रख दिया। शहर गया, लकड़ी बेचकर जब बाकी लकड़ियां लेने वापिस जंगल में उसी स्थान पर आया, तो भाग्य का साथ न होने के कारण उसकी वह गठरी चोरी हो गई थी। सारा दिन जीतोड़ मेहनत करने के बाद भी उसकी उसकी आमदनी उतनी ही रही जितनी रोज की आमदनी थी। दूसरे दिन भी इसी तरह चला। वापस आकर देखता था तो उसकी लकड़ियां चोरी हो जाती थीं। एक हफ्ते के बाद देखा कि उसकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। दूसरे हफ्ते भाग्य का समय था। कर्म ने लकड़हारे से विदा ली और भाग्य ने उसमें प्रवेश किया। अब जैसे ही भाग्य ने बैठे-बैठे उसको लॉटरी लग गई। लॉटरी लगते ही वह लकड़हारा बड़ा खुश हो गया कि क्या भाग्य है? इसलिए उसने सोचा, जब इतना धन आ गया तो मुझे जंगल में जाकर लकड़ी काटने की आवश्यकता ही क्या है? भाग्य का साथ था लेकिन कर्म की शक्ति समाप्त हो गई और बुद्धि भी नहीं थी कि उस धन का सदुपयोग कैसे करें। उसने उस धन को मौज और महफिलों में उड़ाना शुरू किया। सारा धन इस तरह उड़ाता रहा कि हफ्ते भर में सारा का सारा धन समाप्त हो गया। वह अपनी उसी मूल स्थिति में वापिस आ गया। अब तीसरा सप्ताह था बुद्धि का। लकड़हारे से भाग्य ने विदा ली और बुद्धि ने उस लकड़हारे में प्रवेश किया। जब बुद्धि ने प्रवेश किया तो उस लकड़हारे ने सोचना प्रारंभ किया-अब मैं क्या करू? वापस जंगल गया। सबसे पहले बुद्धि से उसने सोचा कि आज मैं अपनी कुल्हाड़ी को पहले अच्छी तरह से तेज कर लेता हूं। कुल्हाड़ी तेज़ करने से दिन भर में काफी लकड़ियां इकट्ठी हो गईं। परन्तु न भाग्य साथ था और न कर्म की शक्ति साथ थी लेकिन बुद्धि चलने लगी। बीच- बीच में कुल्हाड़ी की धार तेज करने से रोज से दुगुनी लकड़ियां कट गईं। फिर वह सोचने लगा कि इसे मैं शहर कैसे ले जाऊं ? बुद्धि का साथ होने के कारण, उसने लकड़ियां को जंगल की बेलों से बांध कर एक गाड़ी जैसी बना ली। उसी गाड़ी के अन्दर सारी के सारी लकड़ियां भरी और खींचते हुए वह सारी के सारी लकड़ियां शहर की ओर ले गया। सारी लकड़ी बेची तो उसकी आमदनी रोज़ की आमदनी से ज्यादा हुई। उससे उसने दूसरी कुल्हाड़ी खरीदी और दोनों की धारों को तेज किया क्योंकि वह जानता था कि लकड़ी काटते-काटते कुल्हाड़ी के धार तो कम होनी ही थी। उस समय वह कहां उसकी धार को तेज करने में समय बरबाद करे? इस तरह से वह दो कुल्हाड़ियां लेकर चला और दोनों कुल्हाड़ियों से उसने सारे दिन में बहुत अधिक लकड़ियां काट लीं। अब तो उसने और भी अधिक बड़ी गाड़ी बना ली और उसमें सारी लकड़ियों को डालकर वह सारी के सारी लकड़ियां शहर ले गया। बेचीं, काफी पैसे आए। उन पैसों से उसने एक खच्चर वाली गाड़ी खरीदी। फिर से दो कुल्हाड़ियां तेज़ धार कर के लीं। इस तरह देखा गया कि हफ्ते के अन्दर उसकी स्थिति काफी अच्छी हो गई थी। अब बुद्धि वापस निकल आई और तीनों राजा के पास गए। तीनों में श्रेष्ठ कौन है? स्थिति को देखते हुए बुद्धि को श्रेष्ठता का प्रमाणपत्र मिला।''

क्रमशः ....

शिवबाबा की शिक्षाएं हीं उनकी छत्रछाया है

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

☑ अंतर्मन ▶ परमात्म श्रीमत अर्थात् शिवबाबा की एक-एक समझानी की जीवन में धारणा हो...

☑ हमेशा हिम्मत रखना, हिम्मत है तो मदद है ही है....

अगर मैं खुशी वाले संकल्प करता हूं तो मेरे भीतर खुशी बढ़ती है और अगर मैं दुःख वाले संकल्प करता हूं तो मेरे भीतर दुःख बढ़ता है। परमात्मा शिवबाबा हम बच्चों से बस एक ही चीज चाहता है कि हम अपने अंदर स्वीकार करने की शक्ति को बढ़ायें। शिवबाबा आया है गृहस्थ आश्रम स्थापन करने। दुनिया में गृहस्थ और आश्रम दोनों को अलग-अलग कर दिया है और भगवान एक करने आता है। इसके लिए ही बाबा ने हमें पढ़ाई पढ़ाकर निमित्त बनने की, सब कुछ करते न्यारे हो जाने की, खुद को मेहमान समझने का ज्ञान दिया है। ताकि हम कहीं मोह में फंस ना जाएं। किसी भी चीज से और साथ ही हमारे अंदर मैं और मेरापन भी खत्म हो जाए। क्योंकि इन दोनों मैं और मेरापन के संतुलन से ही स्थूल में सतयुग की स्थापना होती है। जब हमारे हर कर्म और संकल्प के बीच में परमात्मा बाप होगा अर्थात् उसकी शिक्षाएं होंगी, तभी हम कैसी भी परिस्थिति में मजबूत रह पायेंगे। शिवबाबा की शिक्षाएं ही शिवबाबा की छत्रछाया है। तो अब मेरी एक ही इच्छा भरपूर हो कि मुझे परमात्म श्रीमत अर्थात् शिवबाबा की एक-एक समझानी की जीवन में धारणा हो। यह इच्छा रखने का अर्थ ही है हिम्मत रखना और हिम्मत है तो मदद है ही है। स्व-परिवर्तन ही विश्व-परिवर्तन का आधार है। स्व-परिवर्तन अर्थात् अपने स्वभाव-संस्कार को परिवर्तन कर परमात्मा बाप-समान बना लेना है और जैसे-जैसे आपका स्वभाव-संस्कार परिवर्तन होगा, वैसे-वैसे आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्मायें आपकी सहयोगी बन जायेंगी और सहयोगी बनते-बनते योगी बन जायेंगी। इसलिए अपने संकल्पों पर और बोल पर अटेन्शन रखो। बाबा अपने बच्चों से पूछंता है, बच्चे किसकी याद में बैठे हो? बच्चे कहते बाबा आपकी, बस हम बच्चे इसी तरह अपनी बुद्धि बाप में एकाग्र कर देते हैं अर्थात् सब कुछ करते मन और बुद्धि के द्वारा सब बाबा को समर्पण कर देना है। अपने सारे हिसाब-किताब, कमी-कमजोरी, सब कुछ शिव बाप को सौंप दो और बाप की अंगुली पकड़ अर्थात् बाबा के श्रीमत अनुसार यथार्थ याद में चलते चलना है। बाबा कहते ज्यादा सोचो मत। जब आप हल्के रह बाप के संग रहते हो तो बाप (परमात्मा पिता) आपको गोदी में उठा आपको आपकी मंजिल तक पहुंचा देता है। बस एक बल-एक भरोसा चाहिए। बस इसमें एक बल-एक भरोसा चाहिए। बाबा कहते देखो बच्चे, हिसाब-किताब तो चुक्तु होने ही है परन्तु जब आप बाप को समर्पण हो जाते हो तो बाप किसी भी तरह की आंच बच्चों पर आने नहीं देता है। हर तरफ से अर्थात् स्थूल और सूक्ष्म हर रीति से सुरक्षित रखता है और जितनी-जितनी आपकी समर्पण बुद्धि अर्थात् बाप को सदा साथ रखने का अभ्यास बढ़ता जायेगा, उतनी जल्दी आप बाप-समान बन बाप से सम्पूर्ण सुख का अनुभव कर घर जाओगे। बाबा कहते देखो बच्चे बाप आया ही है आप बच्चों के लिए तो आप भी अपनी सम्पूर्ण जिम्मेंवारी बाप को सौंप हर तरह केप्रश्नों से पार होकर बातों को बिन्दु में परिवर्तन कर बाप-समान बिन्दु बन जाओ। बस थोड़े से पुरूषार्थ के बाद आगे प्राप्तियां ही प्राप्तियां है। बाबा कहते बच्चे, यह परिस्थितियां क्या हैं? कुछ भी नहीं। शिवबाबा तो एक सेकेंड से भी कम समय में सब कुछ परिवर्तन कर सकता है। परन्तु बाप की जिम्मेंवारी बनती है बच्चों को बाप-समान बनाने की। इस कारण बाप बच्चों को हर तरह के परिक्षा से पास करवाकर काबिल बनाकर अपने साथ लेकर जाता है।

भोपाल समृद्ध भारत की ओर राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन आयोजित

समाधान परक मीडिया से समृद्ध भारत की ओर

स्व कमल दीक्षित के प्रथम पुण्यतिथि पर राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन कार्यक्रम में भाग लेते हुए अतिथिगण तथा बीके भाई-बहनें।

- ☑ समाज को सुंदर बनाने में मीडिया का अहम रोल होता है।
- ☑ अगले 25 वर्षो की योजना बनानी चाहिए।

» **शिव आमंत्रण, भोपाल।** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के गुलमोहर कालोनी सेवाकेन्द्र, ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग एवं मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति द्वारा उद्यमिता विकास केंद्र, अरेरा हिल्स भोपाल में आज आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत समाधान परक मीडिया से समृद्ध भारत की ओर विषय पर राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के दौरान अखिल भारतीय समाधान मूलक मीडिया अभियान का शुभारम्भ तिरंगा लहराकर एवं शिवबाबा का ध्वज लहराकर किया गया।

स्व. प्रो. कमल दीक्षित जी की प्रथम पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं उनकी शिक्षाओं को याद किया गया।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने सबसे पहले मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति के संस्थापक प्रो.कमल दीक्षित को याद किया और कहा कि पत्रकारिता को मूल्यनिष्ठ बनाना प्रोफेसर कमल दीक्षित का सपना था। ग्रामीण पत्रकारिता और विकास पत्रकारिता पर भी उनका बहुत फोकस रहता था।

बतौर मुख्य वक्ता प्रो. द्विवेदी ने यह भी कहा कि मीडिया का काम समस्या का समाधान बताना भी है। पत्रकारिता सिर्फ सवाल खड़े न करे बल्कि समाधान भी खोजे। इस मौके पर लोकनिर्माण के संपादक पुष्पेन्द्रपाल सिंह, जोनल निदेशिका बीके अवधेश, वरिष्ठ पत्रकार राजेश राजौड़े, डॉ सोमनाथ बड़नेड़े, मीडिया विंग के नेशनल कॉर्डिनेटर बीके सुशांत और सेवाकेंद्र प्रभारी बीके डॉ. रीना मौजूद रहीं।

अयोध्यावासी स्वर्णकार समाज की महिलाओं को किया सम्मानित

» **शिव आमंत्रण, छतरपुर मप्र।** अयोध्यावासी स्वर्णकार समाज महिला संगठन द्वारा 'सद्भावना रंग महोत्सव' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में बीके शैलजा को आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में छतरपुर पुलिस अधीक्षक सचिन शर्मा, डीएसपी अनुरक्ति सबनानी, ट्रैफिक पुलिस अधीक्षक माधवी अग्निहोत्री, प्रसिद्ध कवियत्री नम्रता जैन, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अर्चना सिंह, प्रसिद्ध सिंगर महिमा दीप पटेल, गूगल गर्ल दिशा नायक जैसी शख्सियत मौजूद रही। छतरपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा ने अपने वक्तव्य में होली के आध्यात्मिक महत्व के बारे में बताया। इस अवसर पर अयोध्यावासी स्वर्णकार समाज की महिलाओं को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

समस्याओं से बाहर निकलना आर्ट ऑफ लाइफ है-बीके शैलजा

» **शिव आमंत्रण, मंडी बामोरा/बीना।** जीवन में समस्याओं का आना पार्ट ऑफ लाइफ है और समस्याओं से बाहर निकलना आर्ट ऑफ लाइफ है। सेवा के मार्ग में आगे बढ़ेंगे तो बाधाएं और समस्याएं आएंगी। इस धरा पर स्वर्णिम युग लाने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होंगे। हमें अपने अंदर सद्गुण अपनाने होंगे। उक्त उद्गार मोटिवेशनल वक्ता बीके शैलजा ने व्यक्त किए। मौका था समाज सेवा प्रभाग की ओर से मानवता के संरक्षक समाजसेवी सम्मान समारोह के आयोजन का। इस मौके पर बीना सेवाकेंद्र प्रभारी बीके बीके सरोज, मंडी बामोरा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जानकी, बीके शिवानी, बीके रिया, बीके अर्चना, प्राचार्य जगदीश त्रिपाठी मुख्य रूप से मौजूद रहे।

» **नारी शक्ति** दादी ने पूरी दुनिया भर में मानवता का बीज बोया, नारी को शक्ति स्वरूपा बनाया...

द्वितीय पुण्य तिथि पर जुटे हजारों लोग, शक्ति स्तंभ पर पुष्पांजलि

» **शिव आमंत्रण, आबू रोड ।** पूरी दुनिया में एक सदी तक मानवता का बीज बोने वाली ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन में संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी का दूसरा पुण्य तिथि वैश्विक आध्यात्मिक जागृति दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी, राजयोगिनी बीके जयन्ति, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी, महासचिव बीके निर्वैर, अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करूणा, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय समेत वरिष्ठ पदाधिकारियों ने दादी के समाधि स्थल शक्ति स्तम्भ पर कुछ मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि दादी का जीवन हमेंशा ही मानवता की सेवा में गुजरा। उन्होंने ज्ञान, योग की शक्ति से पश्चिमी देशों के लोगों को भारतीय संस्कृति और मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। वे हमेंशा प्रकृति के साथ लोगों की आर्थिक और सामाजिक रीति से मदद करती रही। वे त्याग और तपस्या की मूर्ति थी। श्रद्धांजलि सभा में संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी न्यूयार्क की बीके मोहिनी तथा राजयोगिनी बीके जयन्ति ने कहा कि दादी के जीवन से हमेशा हमने सीखा है। वे शक्ति की पुंज थी।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

आध्यात्मिक और राजसिक जीवनशैली

» **शिव आमंत्रण।** आध्यात्म अर्थात् आत्मा का अध्ययन। परमात्म शक्ति से आत्मिक शक्तियों को जागृत करना। आध्यात्म की धारा नित, निरंतर, नूतन, नए प्रयोगों और अनुभवों पर आधारित होती है। आत्मिक चेतना का अभ्यास जितना गहराईपूर्ण और अनुभवयुक्त अवस्था की ओर बढ़ता है तो अनुभवों की माला उनती ही महीन और मजबूत बनती जाती है। आध्यात्म का आधार है संयम, नियम, शुद्ध आहार-विहार, प्रकृति का सान्निध्य, एकांत, सत्संग, अध्ययन, मौन, त्याग-तप और परमात्म योग। जब इन पहलुओं में से किसी भी पहलू की जीवन में रिक्तता होती है तो कहीं न कहीं आध्यात्मिक जीवनशैली प्रभावित होती है। या फिर उत्तरोत्तर प्रगति की बजाय अवनति प्रतिफल के रूप में मन को आत्मग्लानि से भर देती है। आध्यात्मिक जीवनशैली अर्थात् आज से आना वाला कल और बेहतर, श्रेष्ठ और सफल। यदि वर्षों की आत्मिक साधना के बाद भी ठहराव की स्थिति है तो जीवन की समीक्षा करने की जरूरत है। गहराई में जाकर आत्म चिंतन करना होगा कि वह कौन से वह अवरोधक हैं जो उन्नति के मार्ग में खड़े हैं? समस्या की जड़ को समझकर पूरे मनोभाव, केंद्रीय भाव के साथ उसमें जुटना होगा। किसी समस्या के समुचित पहलुओं को जाने-समझे बिना उसका उचित निराकरण संभव नहीं है।

त्याग के पतझड़ में खिलते हैं आध्यात्म के पुष्प

बिना त्याग-तपस्या के जीवन में आध्यात्म के पुष्प पुष्पित नहीं हो सकते हैं। सूरज की 'तपन' और 'पतझड़' के बाद जब पहली बार बूंदें छमझम करतीं बरसती हैं तो मिट्टी की सौंधी सुगंध मन को भावविभोर कर देती है। जमीन की प्यास बुझती है तो वह सारी धरा को ही हराभरा कर देती है। इस आनंद की अनुभूति वही कर सकता है जिसने 'तपन' और 'पतझड़' को जीया हो। इसी तरह जब आत्मा, परमात्म अग्नि से खुद को तपाती है, दिव्य ऊर्जा को समाती है और शक्ति से भरपूर करती है तो उस 'तप' की 'तपन' और त्याग आनंद के रूप में परिवर्तित होकर जीवन को गुले-गुलजार कर देती है। सर्व प्राप्तियों और सर्व सुखों से आत्मा खुद को सुखी-संतुष्ट महसूस करती है।

राजसिक जीवनशैली और अवनति मार्ग-

परमात्म चाह में प्यासा पथिक जब उसे पाकर मिलन मना लेता है तो जीवन में जो पाना था सो पा लिया... की अवस्था की ओर स्वतः ही बढ़ जाता है। परमात्मा मिलन की चाह पूरी होने की अवस्था विकास के क्रम में पुरुषार्थ को ढीला कर देती है। इस यात्रा में उसे पता ही नहीं चलता है कि जिस कठिन, पथरीले, दुर्गम और त्याग के मार्ग पर वह चल रहा है उसमें कब 'राजसिकता' शामिल हो गई है। साधन और सुविधाओं की शैया पर वह कब सो गया, एहसास ही नहीं हो पाता है। जबकि परमात्म मिलन के बाद की स्थिति पहले से ज्यादा सजग और सचेत रहने की होती है। पल-पल जीवन के प्रत्येक पहलू की समीक्षा करते हुए फूंक-फूंककर कदम रखना होता है। नित ज्ञान-ध्यान-योग-साधना की अवस्था में मग्न रहते पिछले अनुभवों से सीख लेते हुए आगे बढ़ना होता है।

जीवन में राजसिक जीवनशैली जितनी कम होगी, उतनी ही आत्मा में तपस्या की अग्नि तीव्र वेग में जलेगी। राजसिकता के व्यापक स्वरूप में स्वाभाविक रूप से तामसिकता प्रवेश कर जाती है। तामसिकता और आध्यात्म एक-दूसरे के परस्पर विरोधी तत्व हैं। ऐसे में पथिक आध्यात्मिक अनुभूतियों के खजानों और गहराई से वंचित रह जाता है, उसके आत्मिक स्वरूप और अंतर्मन में एक खालीपन का एहसास कब अपनी जगह बना लेता है उसे वह समझ ही नहीं पाता है। अंतर्मन से जब हम भौतिक सुख-सुविधाओं को बिसार देते हैं और आत्मिक गगन में नित समाए रहते हैं तो यह त्याग, शक्ति का रूप ले लेता है। पल-पल, प्रतिपल अपने संकल्पों और जीवनशैली की समीक्षा करते हुए आगे बढ़ना होगा। क्योंकि आध्यात्मिकता एक जीवनशैली ही नहीं पूरा जीवन है। यह जीवनभर चलने वाली निरंतर और अनंत यात्रा है। इसे उमंग-उत्साह और आनंद के साथ पूरा करने में ही सफलता है।

दादी प्रकाशमणि विजडम पार्क के प्रथम चरण का लोकार्पण, राजस्थान के ऐतिहासिक टूरिज्म पैलेस में होगा शामिल

3000+
वरिष्ठ बीके पदाधिकारी मौजूद

2000+
लोगों की क्षमता के विशाल ऑडिटोरियम का निर्माण पूरा

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। 10 अप्रैल 2022 को संध्या 6 बजे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के दादी प्रकाशमणी विजडम पार्क का प्रथम उद्घाटन फीता काटकर करते हुए बीके जयन्ति दीदी, बीके संतोष दीदी, बीके चक्रधारी दीदी, बीके राज दीदी एवं बीके मृत्युंजय भाई सहित कई अन्य भाई-बहनें।

विजडम पार्क की खासियत

- थ्रीडी थियेटर
- राजयोग थॉट लैब
- वीडियो स्टूडियो
- न्यूज और एनिमेशन विभाग
- ऊर्जा एवं जल भवन

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के दादी प्रकाशमणि विजडम पार्क के प्रथम चरण के लोकार्पण के साथ यह आमजन के अवलोकन के लिए खोल दिया जाएगा। पार्क में दो हजार लोगों की क्षमता के विशाल ऑडिटोरियम का निर्माण कार्य अंतिम चरण में है, जिसके पूर्ण होने पर माउंट आबू आने वाले टूरिस्ट पानी की लहरों और संगीत की धुन के बीच आध्यात्म की गहराइयों से रुबरु हो सकेंगे। इस पार्क को राजस्थान सरकार ने टूरिज्म प्लेस में शामिल करने की भी योजना बनाई है। यह राजस्थान का पहला ऐसा पार्क होगा जहां पानी की लहरों पर गीत-संगीत के माध्यम से योग-राजयोग का संदेश दिया जाएगा। कार्यक्रम में संस्थान के महासचिव बीके निर्वैर, अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके जयंती, बीके संतोष, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय सहित संस्थान के देश-विदेश से पधारे तीन हजार से अधिक वरिष्ठ बीके भाई-बहनें मौजूद रहे। इस दौरान मधुबन न्यूज के ऑफिस, थ्रीडी वीडियो स्टूडियो सहित बाबा कमरे का लोकार्पण किया गया।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक **शिव आमंत्रण समाचार पत्र** एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य › 110 रुपए, **तीन वर्ष** › 330
आजीवन › 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक › **ब्र.कु. कोमल**
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो › 9414172596, 9413384884
Email › shivamantran@bkivv.org

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021

Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

Published on 14th of each month & Issue- MAY 2022

▪ **प्रकाशक एवं मुद्रकः** ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डीबी कॉर्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ▪ संपादकः **ब्र.कु. कोमल** ▪ संयुक्त संपादकः **ब्र.कु. पुष्पेन्द्र** ▪ **RNI No.: RJHIN/2013/53539**